कुंभ रहस्यम्

सिंहस्थ एक पारंपरिक पौराणिक खोज

लेखक

ज्योतिषाचार्य

पं. विनोद गौतम

प्रकाशक

ज्योतिष मठ संस्थान

ईएम-129, नेहरू नगर, भोपाल, मो. नं. 9827322068

pt.vinodgoutam@gmail.com

web.www.jyotishmath.com

कुंभ रहस्यम्

(सिंहस्थ एक पारंपरिक पौराणिक खोज)

लेखक : ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम

© सर्वाधिकार सुरक्षाधीन : ज्योतिष मठ संस्थान, भोपाल

सहयोग : पं. श्री कैलाशचंद्र दुबे, श्रीमती सुषमा पुरोहित
श्री इलाशंकर गुहा, श्री अशोक प्रियदर्शी

प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान, नेहरू नगर, भोपाल

प्रकाशन वर्ष : 2016 वैशाख शुक्ल संवत 2073

संस्करण : प्रथम

मूल्य : 50 रुपए

आवरण : शनिदेव ग्राफिक्स, भोपाल 9926980190

प्रेरणा स्रोत

यहां मैं उन मार्गदर्शी विद्वानों का उल्लेख कर रहा हूं जिन्होंने पुस्तक 'कुंभ रहस्यम्' को लिखने की प्रेरणा दी।

- *महामंडलेश्वर अवधूत बाबा श्री अरुण गिरि महाराजजी,*
- *मध्यप्रदेश के लोकप्रिय मंत्री महोदय डॉ. नरोत्तम मिश्रजी,*
- *प्रख्यात भविष्यवक्ता श्री नारायण शंकर-नाथूराम व्यासजी,*
- *प्रसिद्ध रामकथा वाचक प्रवचनकार महाराज वैभव भटेलेजी,*
- *वैज्ञानिक पर्यावरण एवं पृथ्वी विज्ञान, डॉ. प्रकाश गौतमजी*

अनुक्रमणिका

1	कुंभ : पौराणिक सत्य	4
2	कुंभ वन्दना	5
3	अमृत कलश वंदना	6
4	अमृत कलश के कर्णधार	7
5	अमृत कुंभ की उपत्ति	9
6	राहू-केतु की उत्पत्ति : समुद्र मंथन रहा कारण	13
7	कुंभ : भक्ति का शक्तिपुंज	14
8	कुंभ : आध्यात्मिकता की जागृति कराता है	16
9	सिहंस्थ की मुख्य पहचान तेरह अखाड़े	19
10	नागा साधुओं की उत्पत्ति?	28
11	महाकुंभ पर्व महात्म्य	30
12	महाकुंभ, कुंभ, अद्‌र्धकुंभ	32
13	कुंभ में ग्रहों की रश्मियों के द्‌वारा आता है अमृत	35
14	कुंभ का कालचक्र	40
15	गंगादि पवित्र सरोवर तट पर ही कुंभ	44
16	सिंहस्थ कुंभ	49
17	सिंहस्थ : आस्था का कुंभ	50
18	उत्तर वाहिनी क्षिप्रा ज्वर पीड़ानाशक	53
19	64 कलाओं की ज्ञानशाला	59
20	उज्जैन का परिचय	73
21	क्षिप्रा का महत्व	75
22	क्षिप्रा की उत्पत्ति	77
23	पृथ्वी लोक में चार, स्वर्गलोक में आठ कुंभ	79
24	क्षिप्रा के पवित्र घाट	88
25	कुंभ पर्व पर तीर्थादि जलाशयों में स्नान, दानादि की विधि	92
26	शास्त्रोक्त ज्ञान एवं वचन	94
27	अमृत मंथन से कामधेनु की उत्पत्ति	101
28	रुद्र वीसी का तीसरा वर्ष	103

कुंभ : पौराणिक सत्य

ज्योतिषीय गणना के महापर्व कुंभ की अमृत गाथा लिखना साधारणतया कठिन ही था, परन्तु इस कार्य के लिए हमारे ऋषि-मुनियों के ज्ञान, पारंपरिक प्रचलित कथाएं कुंभ से संबंधित, पौराणिक ज्ञान तथा प्रसिद्ध धार्मिक ज्ञानमयी समाचार पत्र-पत्रिकाओं आदि के सहयोग से यह पुस्तक कुंभ रहस्यम् आप सभी के पटल पर प्रस्तुत है। प्रस्तुत पुस्तक में सभी प्रकार के धार्मिक, आध्यात्मिक एवं ज्योतिषीय महत्व के साथ सिंहस्थ का संपूर्ण सार समाहित करने का प्रयास है। आशा है यह अमृतमयी ज्ञान पाठकों के लिए जन्म-जन्मान्तरों का सहयोगी बनेगा। इसी आशा एवं विश्वास के साथ...

1.5.2016 सूर्यवार

ज्योतिषाचार्य
पं. विनोद गौतम

<u>खण्ड-एक</u>

कुंभ वन्दना

देव दानव संवादे, मध्य माने महाद्धौ,
उत्पन्नौ सिद्ध तथा कुम्भः वृधतों विश्वना स्वयम।
ततौवे सर्व तीर्थानि देवा सर्वे त्वायिस्थिताः,
स्वयि तिष्ठान्ति भूतानि स्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।

अर्थात हे कुम्भ देव! देव दानव के विवादों के कारण समुद्र मथे जाने पर तुम्हारी उत्पत्ति हुई, जिसे साक्षात विष्णु ने धारण किया है। हे कुम्भ! तुम धन्य हो। तुम्हारे जल में समस्त तीर्थ समस्त देवता, समस्त प्राणी प्राण आदि स्थित रहते हैं। मैं आपको बारंबार प्रणाम करता हूं।

अमृत कलश वंदना

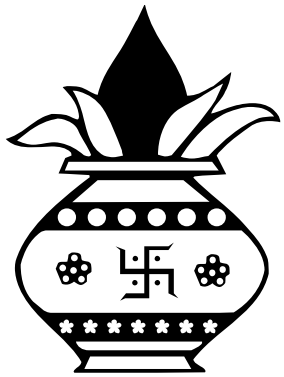

कलशस्थ मुखे विष्णु, कंठे रुद्र समाश्रता।
मूलेस्थतौ ब्रह्मा, मध्ये मात्र गणासह।।
कुक्षौ तौ सागरा सप्ते, सप्दीप वसुंधरा।
ऋग्वेदो, यजुर्वेदो सामवेदो अथर्मणा।।
अंगस्तु सहतानी कलशस्थ समागया।

अर्थात – कलश के मुख भाग पर भगवान विष्णु का निवास है तथा कलश के कंठ में शिव रहते हैं। नीचे मूल भाग में ब्रह्माजी का स्थान है तथा बीच के मध्य भाग में सभी मात्रिकाएं –माताएं हैं। कलश के कुक्ष भाग में सप्त सागर, सप्तदीप, चारों वेद एवं ऋषि–मुनी समाए हुए हैं। ऐसे परिपूर्ण कलश की कल्पना देवताओं ने कुंभ प्राप्ति के पश्चात ही की थी तथा उसमें अपना निवास बनाया था। ऐसे अमृक कलश को मैं प्रणाम करता हूं।

अमृत कलश के कर्णधार

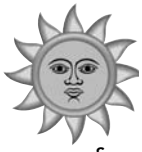

सूर्य

ॐ अकृष्णेन रजसा वर्तमानो।
निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।।
हिरण्ययेन सविता रथेन देवो।
याति भुवनानि पश्यन।।

स्वर्ण के समान दमकती हुई काया के स्वामी भगवान सूर्य जिन्होंने राक्षसों से अमृत कुंभ को बचाया। आप कलंग देश के हैं, आपका गौत्र कश्यप है, दो भुज पद्महस्त पूर्व दिशा के स्वामी, सात अश्वों के रथ पर अपने देवता ईश्वर तथा प्रत्यधि देवता अग्नि को साथ में समाए हुए हैं। आपको मेरा बारंबार प्रणाम।

चंद्र

ॐ इमं देवाऽअसपत्न ꣳ सुबद्धं महते।
क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते।।
जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय, इमममुष्य।
पुत्रमुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष बोमी राजा।।
सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ꣳ राजा।

समुद्र में निवास करने वाले अत्रि गोत्र के श्वेत वर्ण अद्र्धाकृति मंडल के मध्य में पूर्व-दक्षिण दिशा में पश्चिम की

ओर मुख किए दो हाथ वाले, दस अश्वों के रथ पर सवार, हाथ में गधा, गले में श्वेत फूलों की माला पहने हुए, शांत चित्त सौम्य प्रत्यधि देवता को अपने में समए हुए हैं। ऐसे चंद्र देवता को मैं नमस्कार करत हूं।

गुरु

ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्यो ऽअर्हा
द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽऽऋतं प्रजात
तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

जिनकी उपमा भगवान ने स्वयं अपने से बढ़कर कर दी हो ऐसे पीत वस्त्र धारण किए ब्राह्मणाधिपति सिंधु देश के निवासी अंगीरस गौत्र उत्तर दिशा में स्थित उत्तराभिमुख चार भुजा वाले दंड कमंडल सिंह पर सवार जिनके ब्रह्मा अधिदेवता एवं इंद्र प्रत्यधि देवता हैं उनको मेरा षाष्टांग प्रणाम स्वीकार हो।

इसके अतिरिक्त देवराज इंद्र के पुत्र जयंत जिन्होंने अमृत कलश को आकाश में राक्षसों से लेजाकर दूर किया तथा वरुण देव जिन्होंने अमृत को अपने में समाहित किए रखा तथा सभी देव ग्रह, देव ऋषि जिन्होंने अपने चक्षुओं से अमृत कुंभ की पहचान की। उन्हें मेरा बारंबार प्रणाम। कुंभ मेले की शान चारों पीठों के शंकराचार्य सभी अखाड़ों के अखाड़ाधीश, पूज्य महामंडलेश्वर, योगी, ऋषि-मुनी, साधु-संत, तपस्वी, तांत्रिक, अघोरी एवं भिक्षुक वर्ग के साधुओं को मेरा कोटि-कोटि नमस्कार।

अमृत कुंभ की उपत्ति

देव दानव संवादे, मध्य माने महाद्धौ
उत्पन्नौ सिद्ध तथा कुम्भः वृधतों विश्वना स्वयम।

अर्थात हे कुम्भ देव, देव दानव के विवादों के कारण समुद्र मथे जाने पर तुम्हारी उत्पत्ति हुई, जिसे साक्षात विष्णु ने धारण किया है। हे कुम्भ तुम धन्य हो।

ततौवे सर्व तीर्थानि देवा सर्वे त्वायिस्थिताः
स्वयि तिष्ठान्ति भूतानि स्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।

पुराणों के अनुसार जब दैत्यों के आक्रमण से देवता परास्त हुए तब देवताओं ने भगवान से प्रार्थना कर कहा कि प्रभु आपकी सहायता के बिना दानवों पर हम विजय नहीं पा सकेंगे। तब भगवान नारायण ने देवताओं की अवस्था को देखते हुए कहा कि देवगण मंदराचल पर्वत को मथनी और वासुकी नाग को नेथी बनाकर समुद्र का मंथन करते हुए उससे अमृत निकालो। उसका पान करने से तुम सब बलवान और अमर हो जाओगे।

भगवान के कथनानुसार देव-दानव मिलकर अमृत निकालने के प्रयत्न में जुट गए। तब उस शिव सागर से चौदह रत्न - गरल, कौस्तुभ, पारिजात, सुरा, धन्वन्तरी, चन्द्रमा, लक्ष्मी, पुष्पक, ऐरावत, पांचज्जन्य शंख, रम्भा, कामधेनु, उच्चैश्रवा और अमृत कुंभ निकले।

अमृत कुंभ निकलते ही देवताओं के इशारे पर इंद्र पुत्र जयंत अमृत कलश को लेकर उड़ गया। इसके बाद दैत्य गुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत कलश को वापस लेने के लिए जयंत का पीछा किया तत्पश्चात अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव-दानवों में 12 दिन तक अविराम युद्ध होता रहा। इस दौरान पृथ्वी के चार स्थान प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक आदि जगहों पर कलश से बूंदें छलकी थीं।

उस समय चन्द्रमा ने घट से प्रस्तवर्ण होने से सूर्य ने घट टूटने के भय से गुरु व दैत्यों के हरण के भय से इंद्रेदव ने घट की रक्षा की। कलह शांत करने के लिए भगवान ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार सबको अमृत बांटकर पिला दिया। इस प्रकार इस देव-दानव युद्ध का अंत हुआ। देवताओं के 12 दिन मनुष्यों के 12 वर्ष के तुल्य होते हैं। अतः कुम्भ भी 12 होते हैं। इनमें से 4 कुंभ पृथ्वी पर होते हैं तथा 8 कुंभ देव लोक पर होते हैं, इसका पुण्यलाभ देवगण ही प्राप्त कर सकते हैं, मनुष्यों की वहां पहुंच नहीं है।

जिस समय में चंद्रादि ग्रहों ने अमृत कलश की रक्षा की थी। उस समय में वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चन्द्र, सूर्य, गुरु आदि आते हैं। उस समय कुम्भ योग होता है। उसी वर्ष उसी समय राशि और ग्रहों के योग में जहां-जहां अमृत कुंभ बूंदें गिरी थीं, वहां-वहां पर कुंभ पर्व होता है। जो इस प्रकार से हैं - (हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन, नासिक) पुराणों में कुछ इस प्रकार वर्णित है।

प्रयाग कुंभ के संबंध में

मेष राशि गते जीवे मकरे चन्द्र भास्करौ,
अमावस्या तदा योगः कुम्भाछस तीर्थ नायके।
मकरे च दिनानाथे वृष राशि स्थिते गुरौ।
प्रयागे कुंभ योगो वै माघ मासे विधुक्षये।।

(स्कन्ध पुराण)

अर्थात जिस समय बृहस्पति मेष राशि पर स्थित हों तथा चंद्रमा और सूर्य मकर राशि पर स्थित हों उस समय तीर्थराज प्रयाग में कुम्भ योग होता है। जो प्रयाग कुंभ के नाम से प्रसिद्ध है।

हरिद्वार में कुंभ के संबंध में

पद्यिनी नायकं मेघे कुंभ राशि गते गुरौ।
गंगा द्वारे भवेद्योगः कुंभनामा तदोत्तना।।

जिस समय बृहस्पति कुंभ राशि में स्थित हों और सूर्य मेष राशि में रहे ऐसे संयोग के समय हरिद्वार में कुंभ योग बनता है।

नासिक कुंभ के संबंध में

कर्के गुरु स्तथा भानुश्चन्द्रश्चन्द्र क्षये तथा।
गोदावर्या तदा कुम्भो जायतेऽवनि मण्डले।।

विष्णु पुराण

जब कर्क राशि में सूर्य एवं गुरु के साथ चंद्रमा का मिलन होता है तब गोदावरी के तट पर त्र्यम्बकेश्वर कुंभ योग बनता है।

उज्जैन के संबंध में

मेष राशिगते सूर्ये सिंह राश्या बृहस्पति।
अवंतिकायां भवे कुम्भः सदा मुक्ति प्रदायकः।।

उज्जैन में स्नान का महत्व इसलिए और भी अधिक है क्योंकि सिंहस्थ गुरु तथा कुंभ दोनों पर्व मिलते हैं।

उज्जयिनी के कुंभ के विषय में स्कन्द पुराण के अवंति खण्ड में लिखा है –

कुम्भ स्थली महाक्षेत्रं योगिनां स्नान दुर्लभम्।
माधवे धवले पक्षे सिंहे जीवे अजे रवौ।।
तुलाराशौ निशानाये पूर्णायां पूर्णिमातिथौ।
व्यतीपाते तु संजाते चन्द्रवासर संयुते।
उज्जयिन्यां महायोगे स्नाने मोक्षमवात्नुयात्।।

उज्जैन में कुंभ पर्व में निम्न दस योग मुख्य होते हैं –

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, मेष राशि पर सूर्य का होना, सिंह राशि पर गुरु का होना, चंद्र का तुला राशि में होना, स्वाति नक्षत्र, व्यातिपात योग, सोमवार, उज्जैन नगरी का पवित्र स्थल।

राहू-केतु की उत्पत्ति : समुद्र मंथन रहा कारण

राहू और केतु का नाम सुनते ही हर इंसान कांप जाता है। राहू और केतु की उत्पत्ति समुद्र मंथन के समय हुई थी। चूंकि मंथन के समय भगवान ने मोहिनी रूप धारण किया अत: वैशाख शुक्ल पक्ष की एकादशी मोहिनी एकादशी के रूप में मनाई जाती है। भगवान विष्णु जब मोहिनी का रूप धारण कर देवों को अमृत पान करा रहे थे तब एक असुर छल से अमृत पान कर अमर हो गया, यह देखकर भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र चलाया और उस असुर की गर्दन काट दी। असुर का सिर-धड़ से अलग हो गया। सिर वाला भाग राहू और धड़ वाला भाग केतु के नाम से उत्पन्न हो उठा। अधूरा अमृत पान करने से राहू अमृत्व को प्राप्त हो गया था। जिससे उसे नवग्रहों में स्थान प्राप्त हुआ।

सूर्य और चंद्र ग्रहण : कारण हैं राहू-केतु की छाया

सूर्य और चंद्र ग्रहण कारण भी राहू और केतु ही हैं। जब राहू या केतु सूर्य के निकट होता है तो सूर्य को ग्रहण लगा देता है। वहीं अगर चंद्र के निकट आता है तो चंद्रमा को ग्रहण लगा देता है। वास्तव में यह अमृत मंथन के समय पर दुश्मनी का ही परिणाम है जो आज भी सूर्य एवं चंद्रमा को प्रभावित करती है।

कुंभ : भक्ति का शक्तिपुंज

कोई नहीं जानता कि वे कौन सी शक्तियां हैं जो हजारों हजार लोगों को सिंहस्थ आने की प्रेरणा देती है। हजारों किमी दूर किसी देश से लक्जरी फ्लाइट से लेकर पास के किसी गांव तक से लोग चले आ रहे हैं। कोई महंगे सूटकेसों में अपनी दौलत लुटाने आया है तो कोई पोटली में कपड़े और खाने के थोड़े बहुत सामान के साथ बीवी-बच्चों और घर के बुजुर्गों को लेकर चला आया है। ये लोग क्या देखना चाहते हैं, क्या अनुभव करना चाहते हैं, समझना अत्यन्त कठिन है। उन्हें भी नहीं पता कि यहां आकर क्या हासिल होगा, लेकिन बस वे आ गए हैं। घंटों मंदिरों की लाइन में लगे हैं, अनूठे पंडालों को अपलक निहार रहे हैं। संतों के पैर दबा रहे हैं, उनके आसपास मंडरा रहे हैं। किसी संत ने प्रेम से बोल लिया तो पैरों में गिर गए, किसी ने गुस्से में डांट

दिया तो चेहरे पर बिना कोई शिकन लिए चल पड़े। अगले पंडाल की ओर। घर में भंडार भरे हैं, लेकिन भंडारे में प्रसाद के लिए देर तक लाइन में लगे हुए हैं।

घाट से लेकर संतों के पंडालों तक हर श्रद्धालु का अपना एक कुंभ है। वह उसी को जी रहा है किसी के मन में कुछ खाने–पीने की इच्छा है या नहीं कहना मुश्किल है, लेकिन यहां आकर उसके चेहरे पर जो भाव खिलखिला रहे हैं, वह किसी को भी आनंद से भर देने के लिए काफी हैं। यही परमानंद की प्राप्ति है। सिंहस्थ का यह आनंद ही शायद अमृत की उन बूंदों का प्रतिनिधि है जो इंद्र के बेटे जयंत के हाथों कलश से मां क्षिप्रा में बरसी होंगी और यही वह अमृत पुंज्य है जो यहां लोगों को आने पर विवश कर देता है। यह अमृतपुंज की चुंबकीय शक्ति ही आपको यहां तक खींच लाती है।

कुंभ : सनातन धर्म का महापर्व है

सिंहस्थ को महावीर की प्रतीक परंपरा के रूप में भी देखा जा सकता है। इसमें 300 विभिन्न धर्म के 3600 पंत भाग लेने आते हैं। इसलिए सिंहस्थ सर्वधर्म का महाकुंभ है। इस तरह के आयोजन समाज की आवश्यकता है। सनाधन धर्म की जय हो।

कुंभ : आध्यात्मिकता की जागृति कराता है

कुंभ महापर्व धार्मिक व आध्यात्मिक चेतना का महापर्व है। धार्मिक जागृति द्वारा मानवता, त्याग, सेवा, उपकार, प्रेम, सदाचरण, अनुशासन, अहिंसा, सत्संग, भक्ति-भाव, अध्ययन, चिंतन, परम शक्ति में विश्वास और सन्मार्ग आदि आदर्श गुणों को स्थापित करने वाला है। हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन की पावन सरिताओं के तट पर कुंभ महापर्व में भारतवासियों की आत्मा, आस्था, विश्वास और संस्कृति का शंखनाद करती है। उज्जैन और नासिक का कुंभ सिंह राशि पर गुरु के स्थित होने पर मनाये जाने के कारण सिंहस्थ कहलाते हैं। 12 वर्ष बाद फिर आने वाले कुंभ के माध्यम से पवित्र गंगादि तटों पर आध्यात्मिक भारत की तस्वीर उभरती है।

जनकल्याण की भावना वाले साधु-संतों का आगमन

वैदिक जीवन पद्धति कुंभ जैसे आयोजनों का आदर्श रही है। देश को सांस्कृतिक एकसूत्र में बांधने के लिए चारों कोनों में पीठों की स्थापना करने वाले आदि शंकराचार्य भी वैदिक जीवन के ही प्रचारक थे। इसलिए यह जानना दिलचस्प होगा कि कुंभ जैसे आयोजनों के बारे में वेदों में क्या कहा गया है।

वैदिक स्थापनाओं से यह तो स्पष्ट है कि ऐसे आयोजन तब भी होते थे और बाद में आदि शंकराचार्य ने फिर से इस परंपरा को आगे बढ़ाया। वैदिक संस्कृति में जहां व्यक्ति की साधना, आराधना और जीवन पद्धति को परिष्कृत करने पर जोर दिया है, वहीं पवित्र तीर्थ स्थलों और उनमें घटित होने वाले पर्वों व महापर्वों के प्रति आदर, श्रद्धा और भक्ति का पावन भाव प्रतिष्ठित करना भी प्रमुख रहा है। विश्व प्रसिद्ध सिंहस्थ महाकुंभ एक धार्मिक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक

महापर्व है। जहां आकर व्यक्ति को आत्मशुद्धि और आत्म कल्याण की अनुभूति होती है। सिंहस्थ महाकुंभ महापर्व पर देश और विदेश के भी साधु-महात्माओं, सिद्ध साधकों और संतों का आगमन होता है। इनके सानिध्य में आकर लोग अपने लौकिक जीवन की समस्याओं का समाधान खोजते हैं। इसके साथ ही अपने जीवन को उर्ध्वगामी बनाकर मुक्ति की कामना भी करते है। मुक्ति का अर्थ ही बंधन मुक्त होना है और मोह का समाप्त होना है। बंधन मुक्त होना अर्थात मोक्ष प्राप्त करना है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष उक्त चारों पुरुषार्थों में मोक्ष ही अंतिम लक्ष्य है।

ऐसे महापर्वों में ऋषि-मुनी अपनी साधना छोड़कर गुफाओं, कंदराओं से निकलकर जनकल्याण के लिए एकत्रित होते हैं। वे अपने अनुभव और अनुसंधान से प्राप्त परिणामों से लोगों को सहज ही लाभांवित कर देते हैं। इस सारी पृष्ठभूमि का आशय यह है कि कुंभ-सिंहस्थ महाकुंभ जैसे आयोजन चाहे पारंपरिक ही हो, लेकिन वह उच्च आध्यात्मिक चिंतन का परिणाम है और उसका सुविचारित ध्येय भी है। यह रहस्य ही है कि एक-दूसरी की सांसों से चुम्बकत्व की प्राप्ति कर एक से हजार और हजार से लाख और लाख से करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु कुंभ में बिना निमंत्रण के ही पहुंच जाते हैं।

सिहंस्थ की मुख्य पहचान
तेरह अखाड़े

तेरह अखाड़े सिंहस्थ की प्रमुख पहचान है। साधु समाज मुख्यतः तेरह अखाड़ों में बंटा है। सभी अखाड़ों के अपने-अपने इष्टदेव, ध्वज, चिह्न, नियम अनुशासन और सम्बोधन वाक्य होते हैं।

1 श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा
2 पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी
3 श्री पंचायती आनंद अखाड़ा
4 श्री पंचदशनाम आवाहन अखाड़ा
5 श्री पंचायती महानिर्वाणी अखाड़ा
6 श्री शंभुपंच अग्नि अखाड़ा
7 श्री शंभु पंचायती अटल अखाड़ा
8 श्री पंचायती बड़ा उदासीन अखाड़ा
9 श्री पंचायती अखाड़ा नया उदासीन
10 श्री पंचायती निर्मल अखाड़ा
11 श्री अखिल भारतीय पंच रामानंदीय निर्वाणी अखाड़ा
12 श्री अभा श्रीपंच रामानंदीय दिगम्बर अणि अखाड़ा
13 श्री पंच रामानंदीय निर्मोही अणि अखाड़ा

रकम– यह एक प्रकार की प्रतिज्ञा है इसमें तय तिथि को भगवान को भोग लगाकर रकमी रकम लेता है।

सेली– नागाओं की चार सेली होती है। सागरिया, उज्जैचिनया, बसंतिया, हरिद्वारिया। सेली नागाओं को पहदार कहा जाता है। हर सेली का एक महंत होता है। चारों पट्टी का एक महंत भी होता है। श्रीमहंत कभी भी गढ़ी से बाहर नहीं जाते हैं।

उतार-चढ़ाव– सागरिया सेली के नीचे उज्जैनिया, पश्चात बसंतिया और हरिद्वारिया। पुनः हरिद्वारिया के नीचे सागरिया, सागरिया के नीचे उज्जैनिया और उज्जैनिया के नीचे बसंतिया ऐसा ही क्रम चलता है।

शैली – यह अणियां की पहचान ही वस्तु होती है। काले डोरे से बनी शेली को निर्मोही अपने दाहिने पैर तथा निर्वाणी बाएं पैर में बांधते हैं। दिगंबर अणी शैली नहीं बांधते।

महावीरी– सिन्दूर की एक रेखा को महावीरी की प्रसाद कहते हैं। निर्मोही दाहिनी और भृकुटी के पास, दिगंबर सीधी मध्य में तथा निर्वाणी बाईं ओर भृकुटी के पास लगाते हैं

लटूरी– केशों की लटूरी यानी जटा को निर्मोही दाहिनी और झुकी हुई दिगंबर मध्य में तथा निर्वाणी बाई और झुकी हुई बांधते हैं।

अरबी– अर्जुन बाजे को अरबी कहते हैं, जो निर्मोही और निर्वाणी अणि अखाड़ों में बजाया जाता है।

कंठी - सभी साधु-संत मान्यता प्राप्त करने के पश्चात गुरु की दी हुई कंठी अपने कंठ में धारण करते हैं।

शंख-चक्र - विष्णु उपासक साधु-संत शंख एवं चक्र को तप्त अवस्था में अपनी भुजा पर चिह्नित करवाते हैं।

टकसार- नियम पद्धति को जीवन में उतारने वाला टकसार कहलाता है। सभी अखाड़ों की सहमति से अखाड़े के आचार्य का चयन होता है तथा अखाड़ा परिषद का अध्यक्ष भी नियुक्त होता है। साथ ही हर कुंभ में एक प्रशासक या प्रबंधक भी नियुक्त किया जाता है। इसके अलावा हर अखाड़े की छावनी, ध्वज-पताका, वेशभूषा, पेशवाई, शाही, रमता पंच, कोतवाली, छत्री-छत्र, हाथी के हौदे, रथ, पालकियां आदि होती हैं।

साधु-संतों का तिलक-चंदन

संतों के ललाट पर लगे तिलक से संतों के सम्प्रदाय एवं पंथ की पहचान होती है। इस समय सिंहस्थ महाकुंभ मेला क्षेत्र में अलग-अलग अखाड़ों के साधु-संतों के मस्तक पर आकर्षक तिलक सभी को आकर्षित करते हैं। मस्तक एवं शरीर के अन्य भागों पर लगाये जाने वाले तिलक के संबंध में संत-महात्माओं के अलग-अलग मत है।

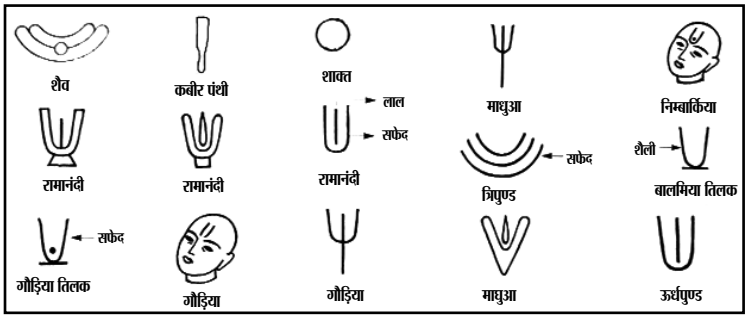

मुख्य रूप से तीन प्रकार के सम्प्रदाय विशेष के संतों द्वारा चंदन, गोपी चंदन एवं रोली से तिलक लगाया जाता है। तीन प्रकार के तिलक मुख्य रूप से संतों की पहचान का बोध कराते हैं। 1. वैष्णव सम्प्रदाय द्वारा ऊर्ध्वपुण्ड्र लगाया जाता है, शैव सम्प्रदाय द्वारा त्रिपुण्ड्र लगाया जाता है। इसी प्रकार शाक्त सम्प्रदाय के अनुयायी रोली का तिलक ललाट पर लगाते हैं।

तिलक एवं शिखा भारतीय संस्कृति की पहचान है, जिस तरह साधारण मनुष्य श्रृंगार करते हैं उसी प्रकार यह साधु का एक मुख्य आभूषण है। तिलक लगाना तीनों अवस्थाओं जाग्रत, स्वप्न एवं सुशुप्ति से ऊपर उठने में सहायक होता है एवं प्रभु को आत्मसात करने का माध्यम होता है। उन्होंने कहा कि तिलक लगाने का भौतिक उद्देश्य भी है। उन्होंने तिलक का भौतिक महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि आज के दौर में मनुष्य व्यर्थ चिंतन एवं मनन करता रहता है। उससे मस्तिष्क में ऊष्मा उत्पन्न होती है एवं तिलक उस ऊष्मा को शांत करने में सहायक होता है।

शैव सम्प्रदाय को मानने वाले त्रिपुण्ड्र लगाते हैं। वे इसकी तुलना ऊँकार से करते हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि तिलक वैष्णवों और शैवों में एकता का प्रतीक भी है। ऐसी मान्यता है कि वैष्णव भगवान शंकर का त्रिशूल उर्ध्वपुण्ड्र के रूप में मस्तक पर लगाते है एवं शैव सम्प्रदाय को मानने वाले तिलक के रूप में भगवान श्रीराम के धनुष को धारण करते हैं।

शक्ति के उपासक शाक्त सम्प्रदाय के उपासक रोली का या काला तिलक लगाते हैं। वे इसे तेजोमय बिन्दु भी कहते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार स्त्री के लिए उसका सुहाग सर्वोच्च है एवं सुहाग की निशानी के तौर पर लाल रंग की रोली से मांग

भरती है, ठीक उसी प्रकार हम लोग लाल रंग का तिलक एक सीधी खड़ी लकीर के रूप में लगाते एवं जो यह तिलक लगाता है वह अभागा नहीं होता। तिलक सौभाग्य की निशानी है एवं तिलक इस बात का बोध कराता है कि परमात्मा एक है।

निर्मल अखाड़ा

सिंहस्थ में साधुओं का चिलम खींचते मिलना आम है। इसके लिए साधु-संतों के अपने-अपने तर्क भी हैं, लेकिन निर्मल ऐसा अखाड़ा है जहां महामण्डलेश्वर या प्रमुख पदाधिकारी ही नहीं, कोई नागा-संन्यासी धूम्रपान नहीं करता है। अखाड़े में धूम्रपान पूरी तरह प्रतिबंधित है। देश में स्थित अखाड़े के सभी केंद्रों पर इसकी सूचना भी स्पष्ट लिखी हुई है।

इस अखाड़े में नहीं एक भी साध्वी

समय के साथ अखाड़ों में साध्वियों की संख्या बढ़ी है। यहां तक कि कुछ अखाड़ों में महिला महामण्डलेश्वरों की संख्या भी बढ़ गई है। यही नहीं अब तो पृथक से महिला अखाड़े का मुद्दा उठने लगा है। आवाहन अखाड़ा ऐसा अखाड़ा है, जहां महिला साध्वी नहीं है। अखाड़े में प्राचीन समय तो आम महिला को उनके अखाड़ों में आने तक की मनाही थी।

यहां राजा बीच में चलता है

दिगंबर अणि अखाड़ा वैष्णव संप्रदाय का ऐसा अखाड़ा है, जिसमें सर्वाधिक खालसा हैं। वर्तमान में दिंगबर अणि में 431 खालसा हैं। शाही स्नान के दौरान भी निकलने वाली सवारी में इसका स्थान विशेष है। शाही स्नान के लिए जब तीनों अणि

अखाड़े निकलते हैं तो इनमें निर्मोही व निर्वाणी के आने-जाने के क्रम में स्थान बदलता है, लेकिन दिगंबर हर स्नान के बीच में ही चला है। फिर स्नान के लिए जाना हो या स्नान कर दोबारा अखाड़े में लौटना हो। दिगंबर अखाड़े को राजा भी कहा जाता है, इसलिए उसका स्थान निर्धारित रहता है। दिगंबर अणि में वैसे तो सबसे कम दो अखाड़े हैं, लेकिन साधु-संतों की संख्या काफी ज्यादा है।

यहां सर्वाधिक महामण्डलेश्वर

जूना अखाड़ा प्रभावशाली अखाड़ों में से एक है। शैव संप्रदाय में महामण्डलेश्वरों के मामले में यह अखाड़ा पहले पायदान पर है। सबसे अधिक महामण्डलेश्वर इसी अखाड़े में है। वर्तमान में जूना अखाड़े में करीब 275 महामण्डलेश्वर है। इनमें महिला और विदेशी महामण्डलेश्वर भी शामिल है। अखाड़े के कुछ प्रमुख महामण्डलेश्वरों का प्रभाव इतना व्यापक है कि इनके विदेशों में भी जूना अखाड़े के नाम से आश्रम है और कई विदेशियों ने सनातन धर्म स्वीकार किया है।

जहां राम जन्मे वह क्षेत्र निर्मोही अणि का

वैष्णव संप्रदाय का निर्मोहीअणि अखाड़ा राम जन्म भूमि के कारण विशेष रूप से जाना जाता है। राम जन्म भूमि अखाड़े के अधीन हैं। अखाड़े को यह भूमि मुगलों के राज्य में उपहार स्वरूप दी गई थी। यहां पुजारी भी निर्मोही के ही रहते हैं। वर्तमान में भी सीता रसोई व राम चबूतरा निर्मोही अखाड़े को मिला है। वर्तमान में अखाड़े में 80 खालसा हैं। उज्जैन में श्रीकृष्ण भगवान की शिक्षा स्थली सांदीपनि आश्रम का स्थान

भी अखाड़े के अंतर्गत ही आता है। वैष्णव में सर्वाधिक खिलाड़ी, अखाड़ाबाज, तलवार बाज आदि भी निर्मोही अखाड़े में हैं। इसके अलावा वैष्णव संप्रदाय की तीनों अणि में अखाड़ों की संख्या भी निर्मोही अणि में सर्वाधिक है। साथ ही इस अधि में नौ अखाड़े शामिल हैं, जबकि दिगंबर में दो और निवार्णी अणि में सात अखाड़े हैं।

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ही बनते हैं साधु

शैव अंतर्गत अटल अखाड़ा भी दीक्षा देने के मामले में वर्ण का विशेष ध्यान रखता है। अखाड़े में ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य को ही दीक्षा दी जाती है। अन्य वर्ण के लोग इसमें शामिल नहीं होते हैं। अटल अखाड़े में अभी तीन-चार हजार साधु-संत हैं। महामण्डलेश्वर कम ही है।

महामण्डलेश्वर हैं एक से बढ़कर एक

निरंजनी अखाड़े में 50 महामण्डलेश्वर हैं। इनमें ज्यादातर उच्च शिक्षित हैं। महामण्डलेश्वर कॉलेज संचालित कर रहे हैं। वरिष्ठ पदाधिकारी शिक्षा को महत्व देते हैं। इसलिए शिक्षण क्षेत्र में अखाड़े की भागीदारी बनी ही रहती है।

अग्नि में सिर्फ ब्रह्मचारी ब्राह्मण को ही दीक्षा

शैव संपद्राय अंतर्गत अग्नि अखाड़ा दीक्षा परंपरा के मामले में सबसे अनूठा है। इस अखाड़े में सिर्फ ब्राह्मण वर्ण के लोगों को ही दीक्षा दी जाती है। मसलन इस अखाड़े के सभी साधु-संत, महात्मा ब्राह्मण हैं। यही नहीं ब्राह्मण के साथ उनका ब्रह्मचारी होना भी जरूरी है। वर्तमान में अखाड़े में पांच महामण्डलेश्वर

व एक आचार्य महामण्डलेश्वर हैं। यह ब्रह्मचारी अखाड़ा है। एक ही वर्ण को दीक्षा देने के कारण इसमें साधुओं की संख्या तुलनात्मक कम है। इसी कारण से वर्तमान में इस अखाड़े में चार-पांच साधु-संत हैं।

बड़ा उदासीन का मतलब सेवा व साधना

बड़ा उदासीन अखाड़े का मुख्य ध्येय सेवा, साधना और स्वाध्याय है जो इसे अन्य से अलग बनाता है। दिव्यांगों को उपकरण वितरण, नेत्र परीक्षण शिविर, भूकंप-बाढ़ आदि त्रासदी में पीड़ित और सरकार को सहयोग करने में अखाड़ा अग्रणी है। देश में प्राकृतिक आपदा आने के बाद यह अखाड़ा अपने स्तर पर सहयोग करता है। यहां पंच व्यवस्था भी दूसरों से जुदा है। अखाड़े में चार महंत होते हैं व वह कभी रिटायर नहीं होते।

पहलवानों से भरा है निर्वाणी अणि

अखाड़ा शब्द सुनते ही लगता है, जहां पहलवान तैयार होते हैं। इस मामले में वैष्णव संप्रदाय का निर्वाणी अणि अखाड़ा सबसे आगे हैं। अखाड़े में वास्तविक पहलवानों कुश्तीबाज की कोई कमी नहीं है। पहलवान भी कोई शौकिया नहीं बल्कि प्रोफेशनल हैं। अखाड़े के कई साधुओं ने प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर की कुश्तियों में भाग लेकर मेडल जीते हैं। कुश्ती इस अखाड़े के लिए आम जीवन का हिस्सा-सा है।

बिना महामण्डलेश्वर वाला है अटल

महामण्डलेश्वर पद का अखाड़े में अलग ही महत्व होता है। प्रचलन में भी इस शब्द का काफी उपयोग होता है लेकिन

अटल एक ऐसा अखाड़ा है, जिसमें किसी को भी आज तक महामण्डलेश्वर नहीं बनाया गया है। अटल अखाड़े में आचार्य पद होता है। वहीं सिंहस्थ या कुंभ में संस्कार करवाते है।

यहां बनते हैं 8 से 12 वर्ष के नागा

नागा बनाने की विशेष प्रथा, नया उदासीन अखाड़े की ऐसी विशेषता है जो दूसरों से जुदा है। इसमें तांग तोड़ नागा बनाए जाते हैं। इसका आशय यह है कि नागा उन्हीं को बनाया जाता है जिनकी उम्र 8 से 12 वर्ष होती है। दाढ़ी-मूंछ नहीं आती है। अखाड़े में महामण्लेश्वर बनाने में भी योग्यता परखी जाती है। वर्तमान में अखाड़े में करीब 13 महामण्डलेश्वर हैं।

महानिर्वाणी करता है महाकाल की भस्मारती

महाकाल का पूजन महानिर्वाणी अखाड़े की विशेषताओं में से एक है। बारह जयोतिर्लिंगों में से एक महाकाल की भस्म आरती महानिर्वाणी अखाड़े के ही महंत-श्रीमहंत करते आ रहे हैं। यह परंपरा कई वर्षों से चली आ रही है। आज भी इस परंपरा के अनुसार महानिर्वाणी अखाड़े के महंत द्वारा ही भस्म आरती की जाती है।

इनके श्रृंगारों में रुद्राक्ष, भस्म, जटा, शिखा, त्रिशूल, डमरू, आसन, कमंडल, कुंडल, कंठी, चूड़ा, पैचूड़ा, खड़ाऊ, लंगोटी, अधोवस्त्र, उपवस्त्र, माला आदि प्रमुख हैं।

नागा साधुओं की उत्पत्ति?

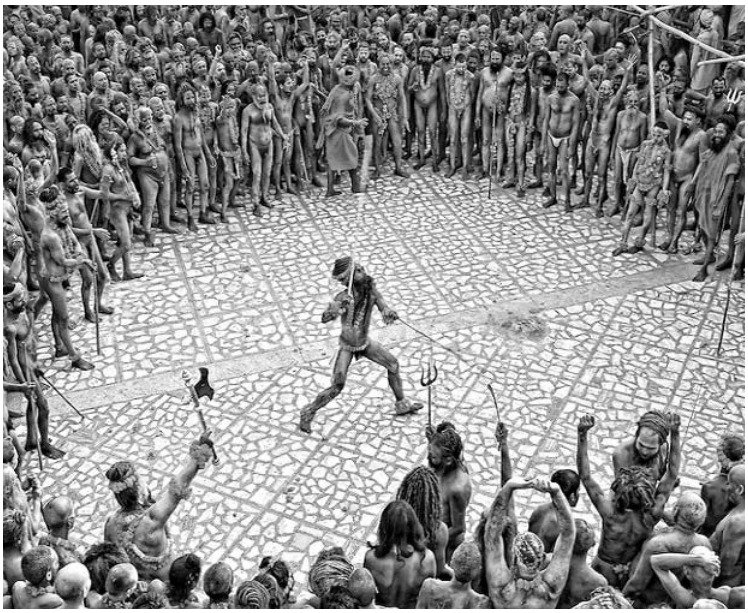

नागा शब्द बहुत पुराना है। भारत में नागवंश और नागा जाति का इतिहास भी बहुत पुराना है।

भारत में नागालैंड नाम का एक स्थान है। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में ही नागवंशी, नागा जाति और दसनामी संप्रदाय के लोग रहते आए हैं। भारत का एक संप्रदाय नाथ संप्रदाय भी दसनामी संप्रदाय से ही संबंध रखता है। वास्तव में शैव पंथ से बहुत सारे संन्यासी पंथों और परंपराओं की शुरुआत मानी गई है।

नागा जाति : नागा भारत की प्रमुख जनजातियों में से एक है। भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य नागालैंड, जिसमें नंगा पर्वत श्रेणियां फैली हुई हैं, नागा जनजाति का मूल निवास स्थान है।

जानिए अखाड़ा शब्द का अर्थ और उत्पत्ति

नागा शब्द की उत्पत्ति के बारे में कुछ विद्वानों की मान्यता है कि यह शब्द संस्कृत के नागा शब्द से निकला है, जिसका अर्थ पहाड़ से होता है, इस पर रहने वाले लोग पहाड़ी या नागा कहलाते हैं। कच्छारी भाषा में नागा से तात्पर्य एक युवा बहादुर लड़ाकू व्यक्ति से लिया जाता है। नागा का अर्थ नंगे रहने वाले व्यक्तियों से भी है। उत्तरी-पूर्वी भारत में रहने वाले इन लोगों को भी नागा कहते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि नागा संन्यासियों के अखाड़े आदि शंकराचार्य के पहले भी थे, लेकिन उस समय इन्हें अखाड़ा नाम से नहीं पुकारा जाता था। इन्हें बेड़ा अर्थात साधुओं का जत्था कहा जाता था। पहले अखाड़ा शब्द का चलन नहीं था। साधुओं के जत्थे में पीर और तद्वीर होते थे। अखाड़ा शब्द का चलन मुगलकाल से शुरू हुआ।

कुछ अन्य इतिहासकार यह मानते हैं कि भारत में नागा संप्रदाय की परंपरा प्रागैतिहासिक काल से शुरू हुई है। सिंधु की घाटी में स्थित विख्यात मोहनजोदड़ो की खुदाई में पाई जाने वाली मुद्रा तथा उस पर पशुओं द्वारा पूजित एवं दिगंबर रूप में विराजमान पशुपति की प्रतिमा इस बात का प्रमाण है कि वैदिक साहित्य में भी ऐसे जटाधारी तपस्वियों का वर्णन मिलता है। भगवान शिव इन तपस्वियों के अराध्य देव हैं। सिकंदर महान के साथ आए यूनानियों को अनेक दिगंबर साधुओं के दर्शन हुए थे। बुद्ध और महावीर भी इन्हीं साधुओं के दो प्रधान संघों के अधिनायक थे। जैन धर्म में जो दिगंबर साधु होते हैं और हिंदुओं में जो नागा संन्यासी हैं, वे दोनों ही एक ही परंपरा से निकले हुए हैं।

महाकुंभ पर्व महात्म्य

कुम्भ शब्द का अर्थ साधारणतया कलश या घड़ा ही है, किन्तु प्रतीक रूप में कुम्भ शब्द समग्र सृष्टि के कल्याणकारी अर्थ को अपने आप में समेटे हुए है। भारतीय प्राचीन शास्त्रों में कुम्भ पर्व की महत्म्य पर विस्तृत चर्चा मिलती है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्वेद आदि में कुम्भ पर्व का बखान किया गया है।

त्वं पृथ्वीं भयन्ति स्केतयन्ति भविष्यतः
कल्याणादिकाय महत्याकाशे, प्रयाग तत् पुण्य स्थाने

अर्थात्- पृथ्वी को कल्याण की आगामी सूचना देने के लिए या शुभ भविष्य के संकेत के लिए महाआकाश में जब बृहस्पति आदि ग्रह जुटते हों, तब हरिद्वार प्रयाग आदि पुण्य स्थानों पर कुम्भ का शुभ समागम होता है। पुराणों में 12 कुम्भ स्थानों की संख्या बतायी गयी है, इसमें 4 मृत्युलोक अर्थात् पृथ्वी पर तथा 8 देवलोक में बताये गये हैं। भारतीय अध्यात्म में मोक्ष की कल्पना पूरे विश्व में भारतीय दर्शन को विशिष्ट स्थान दिलाती है। स्वार्थी और आलसाओं से मुक्त ऋषि-महर्षि मानवकल्याण एवं उच्च आदर्शे की स्थापना के उद्देश्य से तथा साधु-संत, विद्वतजनों की आचार-विचार से ही राजा और प्रजा प्रेरित होकर आनंदपूर्वक अपना जीवन-यापन किया करते थे। इन पुण्य पर्वों में सद्विचारों का आदान-प्रदान, समाज को नवीन चेतना देने, देश, काल एवं वातावरण पर धार्मिक महत्ता का वर्चस्व स्थापित करने, आत्मीयता एवं सौहार्द्र का वातावरण तैयार करने में सहायता मिलती है।

''जधानवृत्तम सवदितिर वनवे पुरूरोज पुरौ रदन सिन्धु।
विभेद गिरि नवभिन्न कुम्भ, भागा इन्द्रो अक्रम सुवैभिः।।''

अर्थात्- कुम्भ पर्व पर जाने वाला मनुष्य अपने सत्कर्मों के फलस्वरूप अपने पापों को वैसे ही नष्ट करता है जैसे कठोर वन को काट देता है, जैसे गंगा नदी अपने तटों को काटती हुई प्रवाहित होती है उसी प्रकार प्रसिद्ध कुम्भ पर्व मनुष्य की पूर्व संचित कर्मों से प्राप्त हुए शारीरिक पापों को नष्ट करता है।

पुराणों में यह भी वर्णन मिलता है कि एक कुम्भ स्नान करने का फल सवा करोड़ अश्वमेध यज्ञों के पुण्य फल के समतुल्य होता है। सामाजिक दृष्टि से राष्ट्र से राष्ट्र में एकता-समता तथा अनुशासन बनाये रखने के लिए राजा-प्रजा, बाल-बुद्ध, नर-नारी, साधु-सन्यासी सबका समागम तथा आपसी विचार-विमर्श, सत्संग एवं परामर्श द्वारा उचित मानकर एक जगह पर एकत्रित होने की कुम्भ की यह परम्परा रही हो।

वैज्ञानिक दृष्टि से हम यह भी मान सकते हैं कि पुराणों में कुम्भ का जो इतिहास है अमृत की बून्द गिरने और उससे लाभ मिलने का, इससे यह भी माना जा सकता है कि ज्योतिष गणना के अनुसार इन चारों अर्थात् हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में 12 वर्षों के अन्तराल में ग्रहों की ऐसी विशेष अवस्था बनती है कि उसी स्थान पर जहाँ कुम्भ की उचित तिथि मानी जाती है,जहाँ ग्रहों की किरणों का विशेष प्रभाव पड़ता है और वहाँ स्नान करने पर अमृत तुल्य लाभ मिलता है और जीवन के विकार और नकारात्मकता समाप्त हो जाती है इसे ही हम पाप का नाश एवं पुण्य का उदय भी मान सकते हैं। जो जीवन को सफल बनाते हैं।

रहस्य

महाकुंभ, कुंभ, अद्‌र्धकुंभ

महाकुंभ स्वर्गलोक में होने वाले उन आठ कुंभों का कुंभ है जो 144 वर्ष में होता है। **कुंभ** पृथ्वीलोक में प्रत्येक 12 वर्ष में चार स्थानों पर होता है। **अद्‌र्धकुंभ** महाकुंभ और कुंभ की तरह ही अद्‌र्धकुंभ पृथ्वी लोक में 6-6 वर्ष के अंतराल में प्रयाग एवं हरिद्‌वार में होता है। कुंभ पर्व हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुंभ पर्व स्थल- हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में स्नान करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष इस पर्व का आयोजन होता है। हरिद्वार और प्रयाग में दो कुंभ पर्वों के बीच छह वर्ष के अंतराल में अद्‌र्धकुंभ भी होता है।

खगोल गणनाओं के अनुसार यह मेला मकर संक्रांति के दिन प्रारम्भ होता है, जब सूर्य और चन्द्रमा, वृश्चिक राशी में और वृहस्पति, मेष राशी में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रांति के होने वाले इस योग को कुम्भ स्नान-योग कहते हैं और इस दिन को विशेष मंगलिक माना जाता है, क्योंकि यह माना जाता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार इस दिन खुलते हैं और इस प्रकार इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। यहाँ स्नान करना साक्षात स्वर्ग दर्शन माना जाता है।

'अद्‌र्ध' शब्द का अर्थ होता है आधा। और इसी कारण बारह वर्षों के अंतराल में आयोजित होने वाले पूर्ण कुम्भ के बीच अर्थात पूर्ण कुम्भ के 6 वर्ष बाद अर्ध कुंभ आयोजित होता है।

ज्योतिषीय महत्व

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कुंभ का असाधारण महत्व बृहस्पति के कुंभ राशि में प्रवेश तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के साथ जुड़ा है। ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से बहती गंगा के किनारे पर स्थित हर की पौड़ी स्थान पर गंगा जल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है। यही कारण है कि अपनी अंतरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से अद्‌र्धकुंभ के काल मे ग्रहों की स्थिति एकाग्रता तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट होती है। हालाँकि सभी हिंदू त्योहार समान श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाए जाते है, पर यहाँ अर्ध कुंभ तथा कुंभ मेले के लिए आने वाले पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक होती है।

कुम्भ मेला हरिद्वार, इलाहाबाद (प्रयाग), नासिक और उज्जैन में बारह वर्षों के अन्तराल से मनाया जाता है। इनमें से सभी स्थानों पर आयोजित होने वाले कुम्भ मेले को विभिन्न राशियों में सूर्य और बृहस्पति की स्थितियाँ निर्धारित करती हैं। हरिद्वार में यह तब आयोजित होता है, जब सूर्य मेष राशि और बृहस्पति कुम्भ राशि में हो।

इलाहाबाद (प्रयाग) में यह तब आयोजित होता है, जब सूर्य मकर राशि और बृहस्पति वृष राशि में हो। यह नासिक में तब आयोजित होता है, जब बृहस्पति सिंह राशि में प्रवेश करता है। इसके अलावा जब अमावस्या पर कर्क राशि में सूर्य और चन्द्रमा प्रवेश करते हैं, उस समय भी नासिक में कुम्भ का आयोजन होता

है। प्राचीन भारत में आध्यात्मिक सत्यों को सांकेतिक कथाओं के माध्यम से सुरक्षित रखा जाता था कालान्तर मे यही कथाएँ विभिन्न परम्पराओं की जनक सिद्ध हुई और हमारी रहस्यमयी संस्कृति ने आकार ग्रहण किया। इसलिए यह सम्भव नहीं था कि कुम्भ जैसे आयोजनों के पीछे कोई कथा न हो।

अमृत कुंड एवं अमृत कलश

सिंहस्थ कुम्भ महापर्व एक विशाल आध्यात्मिक आयोजन है, जो मानवता के लिए जाना जाता है। इसके नाम की उत्पत्ति 'अमरत्व का पात्र' से हुई है। पौराणिक कथाओं में इसे 'अमृत कुण्ड' के रूप में जाना जाता है। भागवत पुराण, विष्णु पुराण, महाभारत और रामायण आदि महान ग्रन्थों में भी अमृत कुंड और अमृत कलश का उल्लेख मिलता है। ऐसा माना जाता है कि देवता और असुरों द्वारा किये गये 'समुद्र मंथन' से अमृत कलश की प्राप्ति हुई थी। इस कलश को प्राप्त करने के लिए असुर और देवताओं में संघर्ष हुआ था। अमृत कलश को असुरों से सुरक्षित रखने के लिए देवराज इन्द्र के सुपुत्र जयंत युद्ध के मैदान से लेकर भागे थे।

रहस्य

कुंभ में ग्रहों की रश्मियों के द्वारा आता है अमृत

अमृतमयी ग्रहों के संयोग-योग का प्रभाव पृथ्वी पर अमरत्व प्राप्त कराता है। सूर्य, चंद्र एवं गुरु की विशेष रश्मियों के साथ नवग्रहों की रश्मियां एक-दूसरे से टकराते हुए उक्त काल में अमृत प्रकट करती हैं। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार यह अमृतरूपी वाष्प एक निश्चित समय पर निश्चित स्थान में अमृत तरंगों का निर्माण कर अमृत वर्षा करती हैं। जो कि जल की बूंदों, वायु के कणों एवं अग्नि के ताप में समाहित रहती हैं। यह रहस्य एक अनुसंधान के आधार पर ही जाना जा सकता है।

यह कुंभ बहुत ही रोमांचक व दार्शनिक दिखाई देगा। धर्म कर्म से जुड़े हुए अनेकों कार्य आपको देखने को मिलेंगे, यदि आप भी चाहे तो इस अमृतमयी योग-संयोग के साक्षी बनकर लाभ उठा सकते है ।

सालों के बाद सिंहस्थ के दौरान सिद्ध अमृत योग बनता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यह स्थिति इस विशिष्ट अवसरों पर दिव्य वातावरण के रूप में दिखाई देती है। पुराणों में बताया गया है कि ग्रहगोचर, चंद्रमास, नक्षत्र गणना तथा कलियुग की आयु की गणना के अनुसार इस बार सिंहस्थ कुंभ में सिद्ध अमृत योग का साक्षी है। यह भूमि अवंतिका नगरी है।

धार्मिक दृष्टिकोण से अमृत योग का खास महत्व है। यह अवसर बहुत ही महत्व व स्वर्ग की अनुभूति के साथ दिखाई देता है। सिंहस्थ के समय क्षिप्रा का जल अमृत के तुल्य हो जाता है। जो व्यक्ति को पवित्र व दीर्घ आयु प्रदान करता है। इस जल से व्यक्ति के पाप नष्ट हो जाते है। व उसे सद गति मिलती है। यह कुंभ में अमृत योग से प्राप्त होता है।

कलियुग की उत्पत्ति की गणना के अनुसार इस बार सिंहस्थ सिद्ध अमृत योग का साक्षी है। धार्मिक दृष्टि से यह योग खास महत्व रखता है। प्राचीन ग्रंथों की मान्यता के अनुसार सिंहस्थ के समय अमृत कलश से कुछ बूंदें तीर्थनगरी अवंतिका में क्षिप्रा नदी में गिरी थीं। सिंहस्थ के समय क्षिप्रा जल के अमृत तुल्य हो जाने की मान्यता है। सिंहस्थ में ग्रहों की स्थिति भी अमृत तुल्य अमृत योग में बनती है।

कुंभ से कला एवं नाट्य शास्त्र का संबंध भी है

भारत के नाट्य शास्त्र में जिन नाटकों के मंचन का उल्लेख मिलता है उनमें अमृत मंथन सर्वप्रथम गिना जाता है। भारतीय नाटक देवासुर-संग्राम की पृष्ठभूमि में जन्मा, इसे जानने के बाद कुंभ का महत्व और बढ़ जाता है और प्राचीनता भी अधिक सिद्ध होती है।

अमृत मंथन के अभिनय से पूर्व कुंभ-स्थापन का उल्लेख भरत ने किया है पर वह पूजा के अंग रूप में ग्रहण किया गया है। अमृत कुंभ से उसका सीधा संबंध नहीं है, किन्तु कुंभ की कल्पना अवश्य उससे सम्बद्ध मानी जा सकती है।

कुम्भं सलिल-सम्पूर्ण पुष्पमालापुरस्कृत्तम।
स्थापयेद्रंगमध्ये तु सुवर्ण चात्र दापयेत्
एवं तु पूजनं कृत्वा मया प्रोक्तः पितामहः।
आज्ञापय विभौ क्षिप्रं कः प्रयोगाः प्रयुज्यताम्।
सचेतनो स्म्युक्तो भगवता योजयामृतमंथनम्
एतदुत्साहजननं सुरप्रीतिकरः तथा

आशय -रंगपीठ के मध्य में पुष्पमालाओं से सज्जित जल से पूर्ण कुंभ स्थापित करना चाहिए और उसके भीतर स्वर्ण डालना चाहिए।

इस प्रकार पूजन करके मैंने ब्रह्मा से कहा- हे वैभवशाली, शीघ्र आज्ञा प्रदान करें कि कौन-सा नाटक खेला जाए। तब भगवान ब्रह्मा द्वारा मुझसे कहा गया-अमृत मंथन का अभिनय करो। यह उत्साह बढ़ाने वाला तथा देवताओं के लिए हितकर है।

वह नाट्य-प्रकार समवकार कहलाता था और भरत द्वारा उसका अभिनय धर्म और अर्थ को सिद्ध करने वाला माना गया है। देवताओं के साथ शंकर की अभ्यर्थना भी की गई। अमृत मंथन से इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु-महेश की एकता और देवताओं की प्रसन्नता अभीष्ट रही, जो आज तक चली आ रही है।

त्रिपुरा-दाह का अभिनय अमृत मंथन के बाद हुआ, भरत मुनि के इस कथन से अमृत मंथन की कथा व महत्ता और बढ़ जाती है। नाट्यवेद की रचना जम्बूद्वीप के भरत खण्ड में पंचम वेद के रूप में मानी गई, क्योंकि शूद्र जाति द्वारा वेद का व्यवहार उनके समय निषिद्ध माना जाता था।

कुंभ में भेदभाव निषेध

यह पांचवां वेद सब वर्णों के लिए रचा गया, क्योंकि राजा भरत शूद्र जाति को भी अधिकार सम्पन्न बनाना चाहते थे, साथ ही अन्य वर्णों का भी उन्हें ध्यान था। सार्ववर्णिकम् शब्द इसलिए महत्वपूर्ण है।

यथा- न वेदव्यवहारों यं संश्रव्यं शूद्रजातिषु।
तस्मात्सृजापरं वेदं पंचमं सार्ववर्णिकम्।

कुंभ का महत्व भी इसी प्रकार सभी वर्णों के समन्वित है। किसी वर्ण का गंगा स्नान अथवा कुंभ-स्नान में निषेध नहीं है। वर्णेत्तर लोग भी स्नान करते रहे हैं।

विष्णु के चरणों से चौथे वर्ण की उत्पत्ति मानी गई है और गंगा भी विष्णु के चरणों से निकली हैं ऐसी पौराणिक मान्यता है। दोनों का विशेष संबंध सांस्कृतिक दृष्टि से उपकारक एवं प्रेरक सिद्ध होगा। इस प्रकार कुंभ हर प्रकार के भेदभाव का निषेध करता है।

कुंभ की वैज्ञानिकता

कुंभ के अवसर पर पंचपुरी देवनगरी हरिद्वार के गंगा जल में डुबकी लगाने की उद्दाम लालसा आदिकाल से ही भारतीय जन मानस में है। शास्त्रों और पुराणों में ऋषियों ने मुक्तकंठ से इस महापर्व की अर्भ्यथना की है। कुम्भ पर अमृत हो जाने वाले गंगा जल के आचमन के लिए दुनिया भर से आये करोड़ों श्रद्धालु पवित्र नदियों गंगादि के तट पर एकत्रित होते हैं। कुम्भ के इसी आध्यात्मिक और सामाजिक महत्व का दिग्दर्शन करते हुए हम 'योग कुम्भ' के संदर्भ में भी विचार करेंगें।

काल खंड की निश्चित अवधि में नैसर्गिक भूखंड पर प्रत्यक्ष प्रवाहित गंगा भावोत्प्रेरक यमुना और अज्ञात विलीन सरस्वती का कुंभ,अद्‌र्धकुंभ और महाकुंभ के आयोजन में देश और देशान्तर से उपस्थित लोग कर्म,भक्ति एवं ज्ञान की शिक्षा ग्रहण करते हैं।

इस संदर्भ में वैज्ञानिक धारणा यह है कि सूर्य के भीतर जो रासायनिक परिवर्तन होते हैं जो कि 12 वर्ष के अंतराल में होते हैं। जलपूरित घट मांगलिक माना जाता है। आज भी समस्थ प्रकार के पूजन में जल से भरे घड़े में समस्त देवों का आह्वान कर पूजार्चन किया जाता है। जिसे कलश कहते हैं।

'कुम्भ' घट का पर्याय है, घट देह का पर्याय है जिसमें अमृत रस रूपी आत्मा व्याप्त है। देह-आत्मा का मिलन ही सृष्टि का संयोजन करता है। देह-आत्मा के स्वरूप को जानने के मार्ग अलग-अलग हो सकते हैं जो मोह या अज्ञान से आच्छादित रहता है। इसी ज्ञान की प्राप्ति के लिए भक्ति,कर्म एवं ज्ञान मार्ग का अनुसरण होता है जबकि सभी मार्गों का अन्त ज्ञान में ही होता है। **'सर्वाकर्माखिलं पार्थे परिज्ञाने सम्प्राप्ते'** (गीता) आच्छादित ज्ञान को देह से आत्मा का संबंध, अद्वैत का ज्ञान ही भारतीय दर्शन का मूल है जिसकी प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक निरूपण किया गया। कालान्तर में **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** के हितार्थ इसे जोड़ दिया गया।

स्वर्ग-मोक्ष की कामना से देवभूमि हरिद्वार की पावन भूमि पर इतनी बड़ी संख्या में लोगों के एकत्रित होने के पीछे सिर्फ धार्मिक भाव ही है या अन्य कोई वैज्ञानिक कारण भी, यह एक शोध का विषय है।

कुंभ का कालचक्र

कुम्भ महापर्व विश्व का सबसे बड़ा मेला है। यह भारत की प्राचीन गौरवरूपी वैदिक संस्कृति व सभ्यता का प्रतीक है। इस महापर्व के अवसर पर देश-विदेश से लोग आते हैं और स्नान, दान कर पुण्य अर्जित करते हैं। कुम्भ पर्व के संबंध में वेद, पुराणों में अनेक मंत्र व प्रसंग मिलते हैं जिनसे सिद्ध होता है कि यह पर्व अत्यंत प्राचीन समय से चला आ रहा है। ऋग्वेद के दशम मंडल के अनुसार कुम्भ पर्व में जाने वाला मनुष्य स्वयं स्नान, दान व होमादिक कार्मों से अपने पापों को उसी तरह नष्ट करता है जैसे कुल्हाड़ी वन को काट देती है। जिस प्रकार नदी अपने तटों को काटती हुई प्रवाहित होती है उसी प्रकार कुम्भ पर्व मनुष्य के संचित कर्मों से प्राप्त हुए मानसिक और शारीरिक पापों को नष्ट करता है और नूतन घड़े की तरह निज स्वरूप को नष्ट कर नवीन सुवृष्टि प्रदान करता है।

कालचक्र में सूर्य, चंद्रमा एवं देवगुरु वृहस्पति का महत्वपूर्ण स्थान है। इन तीनों ग्रहों का योग ही कुम्भ पर्व का आधार है। प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन व नासिक सभी तीर्थों पर हर 12 वर्षों के पश्चात सूर्य, चंद्र व वृहस्पति इन तीनों का विशेष योग बनने पर कुम्भ महापर्व का समागम होता है। माघ मास की अमावस्या पर जब सूर्य और चंद्रमा मकर राशि पर तथा वृहस्पति वृष राशि स्थित हों तो उस समय प्रयाग में कुम्भ महापर्व का योग बनता है। स्कंद पुराण में वर्णित है - **मकरे च दिवानाथे वृषभे च वृहस्पतौ कुम्भ योगो भवेत तत्र प्रयागे हि अतिदुर्लभे।**

कुम्भे घटेभ मूर्धाशौ कुम्भ घड़ा, हाथी का गण्डस्थल, आकाश मंडल की राशि इन तीन अर्थों में प्रयुक्त होता है। समुद्र मंथनजन्य अमृत कुम्भ से सम्बद्ध होने के कारण कुम्भ शब्द उपचारेण एक विशेष अर्थ 'कुम्भ पर्व' अर्थ में प्रयुक्त होता है। कुम्भ शब्द की व्युत्पत्ति छह प्रकार से की गई है।

1- **'कुं पृथ्वीं उम्भयति पुरयाति मंगलेन ज्ञानामृतेन वा'** अर्थात जो समस्त पृथ्वी को मंगल ज्ञान से पूर्ण कर दे।

2- **'कुत्सित उम्भति-'** अर्थात जो पर्व संसार के अरिष्ट और पापों को दूर कर दे।

3- **'कु-पृथ्वी उम्यते अनुगृह्यते आच्छाद्यते आनन्देन पुण्येन वा'** अर्थात जिस पर्व के द्वारा पृथ्वी को आनंद व पुण्य से ढक दिया जाय।

4- **'कु-पृथ्वी उम्यते लह्वी क्रियते पाप प्रक्षालनेन येन'** अर्थात पृथ्वी पर पापों को धोकर जब उसे हल्का बना दिया ऐसा पर्व कुम्भ ।

5- **'कु पृथ्वी भावयति दीपयति'** अर्थात जो पर्व पृथ्वी को सुशोभित कर दे, दीप्त कर दे, उसके तेज को बढ़ा दे।

6– **'कुं सुखं ब्रह्म तद उम्भति प्रयच्छतीति कुम्भ–'** अर्थात सुख स्वरूप परम ब्रह्म के अनुभव को प्रदान करने वाले संत समागम का नाम कुम्भ है।

कुम्भ शब्द का उल्लेख वेदों में आता है। ऋग्वेद के दशम मंडल एवं यजुर्वेद व अथर्ववेद में कुम्भ शब्द समस्त संसारवासियों के लिए शुभ कर्मों के अनुष्ठान हेतु आता है।

पूर्णः कुम्भेऽधिकाल आग्हिस्तं वै पश्यामो बहुधा नु संतः।
सह इमा विश्वाभवनानि प्रत्यंकाले तमाहु परमेश व्योमन्

अथर्ववेद में ब्रह्माजी का कथन है – हे पृथ्वी ! मैं तुम्हें दूध, दही और जल से पूर्ण चार कुम्भों को चार स्थान पर देता हूं।

चतुरः कुम्भय चतुर्था ददामि क्षीरेण पूर्णाम उद्केनदध्ना।

पुराणों के अनुसार पहले चाक्षुष मनवंतर में देव–दानवों ने भगवान विष्णु की सहायता से समुद्र मंथन किया। स्कंद पुराण के अनुसार समुद्र मंथन से कालकूट विष के अतिरिक्त तेरह रत्न प्रकट हुए जिसमें से एक 'अमृत कलश' भी था।

पृथिव्यां कुम्भ योगस्य चतुर्थाभेद उच्यते।
चतुःस्थले निपनात् सुधा कुम्भस्य भूतले।।
इन्द्रःप्रस्त्रवगात् रक्षां सूर्यो विस्फोटनात् रधौ।
दैत्येभ्यश्च गुरु रक्षां सौरिः देवेन्द्रजात् भयात।।

देवताओं का एक दिन मानवों का एक वर्ष है। अतः प्रत्येक 12 वर्ष पश्चात कुम्भ पर्व हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन एवं नासिक में होता है। ज्योतिष के अनुसार गुरु प्रायः एक वर्ष में एक राशि का भोग करता है। कुम्भ राशि के गुरु में हरिद्वार, वृष राशि के गुरु में प्रयाग, सिंह राशि के गुरु में उज्जैन तथा तुला राशि के गुरु में नासिक में कुम्भ पर्व होता है। सूर्य प्रायः एक महीने में

एक राशि का भोग करता है। जब सूर्य मेष राशि का हो तो हरिद्वार में मुख्य स्नान, मकर का हो तो प्रयाग में, मेष का हो तो उज्जैन में तथा सिंह राशि का होने पर नासिक में प्रमुख स्नान होता है। सूर्य के साथ चंद्र की स्थिति भी कुम्भ पर्व के लिए आवश्यक है। चंद्र सूर्य की मेष संक्रांति तथा अमावस्या तिथि में होने पर हरिद्वार का पुण्यकाल, माघ अमावस्या तिथि के चंद्रमा में प्रयाग का पुण्यकाल, स्वाती नक्षत्र का योग तुला के चंद्रमा में उज्जैन तथा सिंह के चंद्रमा में नासिक का पुण्य काल आता है।

एक साल में एक बार

शास्त्रों के अनुसार इन स्थानों में सूर्य राशि भ्रमणवश वर्ष में एक बार अमृत पुण्य योग बनता है। जो इन स्थान की पवित्र नदियों में स्नान करने से प्राप्त होता है।

1.हरिद्वार-अप्रैल-मई (चैत्र-वैशाख) सूर्य मेष में

2.प्रयाग - जनवरी-फरवरी (माघ-फाल्गुन) सूर्य मकर में

3.उज्जैन - अप्रैल मई (चैत्र-वैशाख) सूर्य मेष में

4. नासिक - जुलाई-अगस्त (अषाढ़-श्रावण) सूर्य कर्क में

उपरोक्त स्थानों पर उपरोक्त समय में साल में एक बार अमृत पुण्य योग की छाया रहती है। यह योग भी पच्चीस प्रतिशत कुंभ का पुण्य प्राप्त कराता है।

गंगादि पवित्र सरोवर तट पर ही कुंभ

ये पवित्र नदियां हैं- हरिद्वार में गंगा, उज्जैन में क्षिप्रा, नासिक में गोदावरी और इलाहाबाद का संगम जो गंगा, यमुना और सरस्वती के मिलने से बनता है।

कुंभ महापर्व विश्व के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक है। यह आमंत्रण है उन श्रद्धालुओं के लिए जो कई वर्षों से इसकी प्रतीक्षा करते हैं। कुंभ का शाब्दिक अर्थ होता है - कलश जो अमृत के लिए देव-दानवों से जुड़ी कथा का स्मरण कराता है।

इसके अलावा ज्योतिष में कुंभ राशि का भी यह संकेत है। कुंभ नवजीवन, अमृत, सुख, सौभाग्य, सृजन और शुभत्व का

संकेत माना जाता है। धार्मिक आयोजनों में पवित्र कलश रखने का यही रहस्य है। हर 12 साल के अंतराल पर कुभ चार नदियों के पवित्र तट पर आयोजित किया जाता है।

ये पवित्र नदियां हैं- हरिद्वार में गंगा, उज्जैन में क्षिप्रा, नासिक में गोदावरी और प्रयाग का संगम जो गंगा, यमुना और सरस्वती के मिलने से बनता है।

ज्योतिष के अनुसार जब कुंभ राशि में गुरु और मेष में सूर्य का प्रवेश होता है तो कुंभ का आयोजन किया जाता है। जानिए उन स्थानों के बारे में जहां कुंभ मेले का आयोजन होता है।

1. हरिद्वार- प्राचीन धर्म नगरी जो प्रभु कृपा के साथ ही मोक्ष भी प्रदान करती है। हरिद्वार का अर्थ है हरि का द्वार। इस नगरी में कुंभ जैसे महापर्व में शामिल होने वाले भक्त के लिए भगवान की कृपा के द्वार खुल जाते हैं।

2. नासिक- यहां गोदावरी के पवित्र जल में श्रद्धालु निर्मल जीवन के लिए डुबकी लगाते हैं। यहां भी अमृत कलश की बूदें गिरी थीं। यहां प्राचीन ज्योतिर्लिंग त्र्यम्बकेश्वर स्थित है जिसके दर्शन कर श्रद्धालु अपने जीवन में प्रभु की कृपा को अनुभव करते हैं। यहां शिवरात्रि पर्व भी बहुत श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है।

3. उज्जैन- यह धर्म के साथ ही सत्य और विजय की नगरी है। यह क्षिप्रा नदी के तट पर बसी है। उज्जैन का ज्योतिष के अनुसार भी विशेष महत्व है। धरती पर इसकी स्थिति बहुत खास है। यह मोक्ष देने वाली नगरी है। माना जाता है कि यहीं भगवान शिव ने त्रिपुर राक्षस का वध किया था। यहां स्नान करने से शिव की कृपा के साथ ही जीवन के दोष दूर होते हैं।

4. इलाहाबाद– यहां गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है। प्रयाग का कुंभ सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। यहां दूर–दूर से श्रद्धालु आते हैं। भगवान श्रीराम और कृष्ण की भूमि उत्तर प्रदेश में जब कुंभ मेले का आयोजन होता है तो इसकी शोभा निराली होती है। इस स्थान पर सिर्फ नदियों का ही संगम नहीं होता, यह भक्त का भगवान के साथ संगम भी है।

आत्मा से परमात्मा का मिलन

वास्तव में इन चार नदियों के किनारे कुंभ मेला भरने का प्रमुख कारण अमृत कलश से छलकी बूंदें हैं लेकिन इसके अलावा भी इसका एक और कारण है। मानव जीवन की भी चार अवस्थाएं होती हैं। चार ही आश्रम होते हैं जिनसे गुजरकर जीवन आगे बढ़ता है। इसलिए इन चार नदियों के किनारे आयोजित कुंभ मेला जीवन की चारों अवस्थाओं को सुंदर और सफल बनाता है। मानव प्राणी अवस्थावश तृप्त होता है। फिर तृप्त होने के बाद संतुष्टि प्राप्त करता है। उसके बाद ही उसे सुख की प्राप्ति होती है। जो उसे आनंद प्रदान करती है यही आनंद उसे परमानन्द की प्राप्ति कराता है और परमानंद की प्राप्ति हो जाना हा अमृत्व की प्राप्ति है। कुंभ स्नान का यही इसका रहस्य है।

कानूनी सलाहकार

श्री अमित शुक्लाजी, एड. हाईकोर्ट जबलपुर
श्री उमाकांत शुक्लाजी (सीनि. एड.), सतना मो.-9303321029
श्री ओपी त्रिपाठीजी (एड. हाईकोर्ट), जबलपुर मो.-9826768278
श्री योगेश द्विवेदीजी (एड.) भोपाल मो.-9425159954

पदाधिकारी

ज्योतिष मठ संस्थान

पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतम
संस्थापक अध्यक्ष

डॉ. जे.पी. पॉलीवाल
उपाध्यक्ष

पं. श्री विनोद गौतम
संचालक

पं. श्री कैलाश चंद्र दुबे
कार्यालयाध्यक्ष

श्रीमती सविता गौतम
कोषाध्यक्ष

श्रीमती सुषमा पुरोहित
व्यवस्थापक

श्री सुबोध मिश्रा,
श्री जितेंद्र शर्मा
सह-व्यवस्थापक

मार्गदर्शी

पूर्व जस्टिस मा. श्री डीपीएस चौहानजी, इलाहाबाद
जस्टिस मा. श्री आरडी शुक्लाजी, भोपाल
जस्टिस मा. श्री अशोक तिवारीजी, इंदौर
न्यायमूर्ति मा. श्री एसएन द्विवेदीजी, भोपाल

जारी है अनुसंधान

जो अज्ञात है उसे ज्ञात करा देने वाले तत्व का नाम ही ज्योतिष है। इस आधार पर मनुष्य जीवन को अपने भविष्य के शुभ परिणाम से संजोया जा सकता है। इसके लिए ज्योतिष अनुसंधान जरूरी है। जिसकी अहम जिम्मेदारी का निर्वहन भोपाल के नेहरू नगर क्षेत्र स्थित ज्योतिष मठ संस्थान कर रहा है। देश के प्रख्यात ज्योतिषी पं. अयोध्या प्रसाद गौतम द्वारा संस्थापित इस अनुसंधान केंद्र में ज्योतिष संबंधी सभी विधाओं पर अनुसंधान जारी है। ज्योतिष में रुचि रखने वाले नवोदित छात्र भी ज्योतिषीय ज्ञान व शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ज्योतिष मठ में जन्म कुंडली के आधार पर ज्योतिष मिलान तो किया ही जाता है साथ ही विद्वान पंडितों द्वारा ग्रह शांति निमितार्थ पूजन-अनुष्ठान भी होते हैं। इस तरह के अनुष्ठान जीवन के किसी विशेष क्षेत्र में उन्नति व सुख-संपदा, संतति के साथ राजसत्ता प्राप्ति के लिए भी संपन्न कराए जाते हैं। शनि, राहु, मंगल, सूर्य आदि ग्रहों की दशा शांति के निमित्त भी ज्योतिष मठ में पूजन-विधान व अनुसंधान किए जा रहे हैं। जन्म कुंडली, लग्न पत्रिका, विवाह मिलान आदि कार्य भी उत्कृष्ठतापूर्वक होते हैं। इस तरह ज्योतिष कार्य के अलावा हस्तरेखा व वास्तु आदि पर भी विस्तृत अनुसंधान किए जाते हैं। इस मठ संस्थान में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी से लेकर कई राजनेताओं, साहित्यकारों, बड़े प्रशासकों के अलावा कुख्यात दस्यु व अन्य ऐसे लोगों के हस्त छाप भी संग्रहीत हैं जो किसी क्षेत्र विशेष में अपनी कला कौशल के लिए ख्यात रहे हैं। ज्योतिष मठ में सैकड़ों वर्ष पुराने कैलेंडर व पंचांग आदि भी संग्रहीत हैं। इसके अलावा ग्रह शांति पूजन-अनुष्ठान में उपयोग आने वाले सैकड़ों वर्ष पुराने सुरवा थाल, पंच पात्र आदि उपलब्ध हैं जिनका उपयोग ग्रह शांति आदि अनुष्ठान में होता है।

खण्ड-दो : सिंहस्थ कुंभ

ॐ महाकालाय नमः

सिंहस्थ कुंभ के राजाधिराज भगवान महाकाल को मेरा बारंबार प्रणाम। कुंभ की पावन भूमि पर स्थित माता क्षिप्रा सहित गंगा, जमुना, कावेरी, नर्मदा, सरयू, महेन्द्र, तन्मय, वेदवती, महासुर नदी, ख्याता, गया, गांडकी के पवित्र अमृत मयी जल में नमन करता हूं। इसके साथ ही सिंहस्थ के देवता मेष राशि के सूर्य तथा सिंह राशि के गुरु को एवं तुला राशि के चन्द्रमा को मेरा प्रणाम।

सिंहस्थ : आस्था का कुंभ

मेष राशिगते सूर्ये सिंह राश्या बृहस्पति।
अवंतिकायां भवे कुम्भः सदा मुक्ति प्रदायकः।।

उज्जैन में स्नान का महत्व इसलिए और भी अधिक है क्योंकि सिंहस्थ गुरु तथा कुंभ दोनों पर्व मिलते हैं।

उज्जयिनी सिंहस्थ के कुंभ के विषय में स्कन्द पुराण के अवंति खण्ड में लिखा है –

कुम्भ स्थली महाक्षेत्रं योगिनां स्नान दुर्लभम्।
माधवे धवले पक्षे सिंहे जीवे अजे रवौ।।
तुलाराशौ निशानाये पूर्णायां पूर्णिमातिथौ।
व्यतीपाते तु संजाते चन्द्रवासर संयुते।
उज्जयिन्यां महायोगे स्नाने मोक्षमवात्नुयात्।।

उज्जैन में कुंभ पर्व में निम्न दस योग मुख्य होते हैं -

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, मेष राशि पर सूर्य का होना, सिंह राशि पर गुरु का होना, चंद्र का तुला राशि में होना, स्वाति नक्षत्र, व्यातिपात योग, सोमवार, उज्जैन नगरी का पवित्र स्थल। ये योग 144 वर्ष में एक साथ आते हैं।

सिंहस्थ का केवल धार्मिक महत्व भी नहीं बल्कि खगोलीय महत्व भी है। उज्जैन के महत्व एक मुख्य कारण उसकी भौगोलिक स्थिति भी है, लेकिन वर्तमान में इसका महत्व सिंहस्थ के कारण और भी बढ़ जाता है। इस संबंध में शास्त्रों का कहना है-

सहस्त्रंकार्तिके स्नानं माघे स्नाशतानिच।
वैशाखे नर्मदा कोटिः कुम्भ स्नाने नत्फलम्।।

अर्थात् सभी स्नानों में कुंभ का स्नान सभी प्रकार के फल देने में सक्षम है। यह स्नान रोगनाशक होता है तथा अमरत्व की प्राप्ति कराता है।

सिंहस्थ भूमि उज्जयिनी

भारत के चार प्रमुख कुंभ पर्वों में उज्जैन का कुंभ सिंहस्थ कुंभ महापर्व कहलाता है। प्राचीन ग्रंथों में कुरुक्षेत्र से गया को दस गुना, प्रयाग को दस गुना और गया को काशी से दस गुना पवित्र बताया गया है, लेकिन कुश स्थली अर्थात उज्जैन को गया से भी दस गुना पवित्र कहा गया है। उज्जैन नगरी अपनी विशिष्ट महानता के लिए भी प्रसिद्ध है।

मोक्षदायी कुंड

इस क्षेत्र में कुंडों का विशेष महत्व है। यहां स्थित कुंड हैं। 1. गोमती कुंड 2. कलहनाशना 3. मणि कर्णिका 4. अप्सरा कुंड, 5. महीषा कुंड 6. रूपा कुंडा 7. अनंग कुंड, 8. करी कुंड 9. अजांगध कुंड 10. नरदीप कुंड 11 सुंदर कुंड, 12 वामन कुंड 13. दुग्ध कुंड 14 रुद्र कुंड।

शास्त्रानुसार साथ ही यहां रापी अर्थात तालाब झील को भी महत्वपूर्ण माना गया है। उपरोक्त सभी अमृत कुंड हैं इन्हीं रहस्यात्मक कुंडों में ही कई वर्षों के कुंभ योगों का अमृत समाया हुआ है।

शास्त्रोक्त मान्यतानुसार तीर्थ या पवित्र स्थल पर शुभ घड़ी में किया गया स्नान फलदायी होता है। कुंभ में किया गया एक स्नान, कार्तिक माह में किए गए हजारों स्नानों से ज्यादा फलदायी है। माघ के सैकड़ों स्नान और वैशाख महीने में नर्मदा में एक करोड़ स्नान भी कुंड में किए गए स्नान की बराबरी नहीं कर सकते।

उत्तर वाहिनी क्षिप्रा ज्वर पीड़ानाशक

मोक्षदायिनी मां क्षिप्रा का तट 24 संगम तीर्थ की मान्यता लिए हुए है। क्षिप्रा का जीरो रेखांश से संबंधित होना, उसने उत्तर वाहिनी होने से विश्वभर की नदियों में विशेष स्थान है। मां क्षिप्रा की स्तुति अमृत संभवा, ज्वरहनी, कनक श्रृंगा, पापहनी आदि नामों से जाती है। धर्मशास्त्रों के अनुसार कार्तिक मास की पूर्णिमा विशेष महत्व रखती है। इस पर्वकाल पर देव, ऋषि, पितरों के निमित्त तर्पण, पिंडदान, आरती धन दान और दीपदान करने पर विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है।

पर्वकाल पर मां क्षिप्रा के तट पर समस्त दान व आरती कर संपूर्ण पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। मां क्षिप्रा की आरती प्राचीन परंपरा है। जो सृष्टि से चली आ रही है। चूंकि क्षिप्रा में स्नान करने से समस्त ज्वर व रोगों का हरण हो जाता है। इसलिए क्षिप्रा को ज्वरहनी नाम से भी जाना जाता है।

अक्षय योग का सिंहस्थ

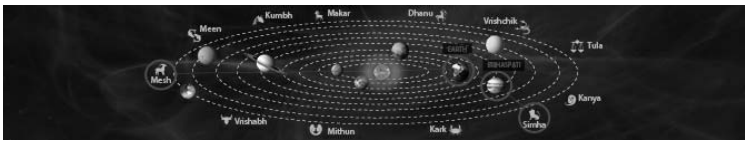

जब सिंह राशि के गुरु की प्राप्ति वैशाख शुक्ल पूनम में हो तब उज्जैन में सिंहस्थ महापर्व होता है। इसके लिए 10 योग बताए जाते हैं। 2016 ई. सिंहस्थ में कुल 6 योगों का संयोग हुआ है। ज्योतिष मठ संस्थान के अध्ययन अनुसंधान के आधार पर यह सिंहस्थ 60 प्रतिशत ऊर्जामयी तथा अमृतमयी है। अमृत योग का संयोग 144 वर्ष बाद बना है। अक्षय तृतीया की शुभ घड़ी संभवता पूर्ण अमृतमयी रश्मियां प्रदान करेगी। बुध का सूर्य के ठीक नीचे आकर अपनी ऊर्जा देना तथा अनादि तिथि पर अक्षय योग होना एवं इस दिन पृथ्वी पर छह योग अवतरित होना अमृत कुंभ का दैवीय रहस्य।

देवी-देवताओ की भूमि अवंतिका

अंवतिका का भूमि तपो भूमि है। यह तंत्र भूमि होने के कारण अनादि देवी देवताओं तथा ऋषि-मुनियों की निवास स्थल रही है। अवंतिका अर्थात उज्जैन की भूमि देवी-देवताओं से परिपूर्ण है। यहां उत्तर वाहिनी क्षिप्रा, दक्षिणेश्वर ज्योतिर्लिंग श्री महाकाल, दक्षिणेश्वरी महाकाली हरसिद्धि, दक्षिणी तंत्र प्रधान अष्ट महाभैरव, अष्ट विनायक गणेश सहित नवनाथ, तंत्र

सिद्ध स्थली ओखरेश्वर, महाशक्ति भेद शमशान तीर्थ, चक्रतीर्थ, चौरासी महादेव, नव नारायण आदि विशेष देव तथा देवियों से पूरिपूर्ण यह धरा इनके दर्शन से मनोकूल फल की प्राप्ति के साथ भगवान महाकालेश्वर के दरबार में स्थित रिद्धि-सिद्धि गणेश के दर्शन करने से सभी विघ्न बाधाएं दूर होती हैं। इसके अतिरिक्त गढ़महादेव पंचक्रोशी देवों का अपना अलग ही प्रभाव है। प्रत्येक वर्ष वैशाख महीने में पंचक्रोशी यात्रा का आयोजन होता है जिसमें लाखों श्रद्धालु देवों की परिक्रमा कर पुण्य लाभ अर्जित करते हैं।

गढ़कालिका माता : सम्राटों की आराध्य देवी

प्राचीनकाल में सम्राटों की आराध्य देवी रही माता गढ़कालिका का मंदिर उज्जैन में आज भी शोभायमान है। महाकवि कालिदास, राजा विक्रमादित्य यहां साधनाएं करते थे। सम्राट हर्षवर्धन ने ई.स. 606 में इस मंदिर को फिर से बनवाया था। सिंदूरयुक्त भव्य प्रतिमा के माथे पर चंद्रमा सुशोभित है तथा अगल-बगल महालक्ष्मी व महासरस्वती की प्रतिमाएं स्थापित हैं। माना जाता है कि महाकवि कालिदास को शास्त्रों का दिव्य ज्ञान इसी मंदिर से मिला था। त्रिपुरा महात्म के अनुसार देश के 12 शक्तिपीठों में से यह छटा स्थान है। यह मंदिर जिस जगह पर है, वहां पुरानी अवंतिका नगरी बसी हुई थी। जो कालांतर में प्राकृतिक

प्रकोप, धूलकोट (धूल का गुब्बार) के कारण दब गई थी। गढ़ की देवी होने के कारण इनका नाम गढ़कालिका पड़ा।

महाकाल गणेश मंदिर

विश्व प्रसिद्ध भगवान महाकाल के दरबार में स्थित रिद्धि-सिद्धि गणेश का यह मंदिर अनूठा है। प्रचलित है कि इनके दर्शन मात्र से ही युवतियों को योग्य वर की प्राप्ति होती है। अति पुरातन सुंदर प्रतिमा रिद्धि-सिद्धि के रूप में सुशोभित है। यहां भक्तों की हर मनोकामना पूरी होती है। पूर्व में ऐसी व्यवस्था थी कि महाकाल आने वाले श्रद्धालु पहले इनके दर्शन करते थे, बाद में महाकाल के दर्शन कर पुण्य अर्जित करते हैं।

श्मशान गणेश मंदिर

भगवान गणेश की अति प्राचीन दुर्लभ प्रतिमा शमशान चक्रतीर्थ में स्थित है। इस प्रतिमा में दस हाथ हैं, इसलिए इनका नाम दसभुजानाथ पड़ा। इसका उल्लेख स्कंध पुराण के अवंतिका खंड में भी मिलता है। यदि यहां कोई भक्त लगातार पांच बुधवार आता है, तो उसकी हर मनोकामना पूरी होती है।

हरसिद्धि देवी मंदिर

इस मंदिर में पहुंचने के बाद ही आपको तंत्रसिद्धि के स्थान का आभास होगा। यह पर 2100 दीपों के खंभों की प्रज्वलित ज्योति को बिरले मनुष्य ही दर्शन कर पाते हैं। यहां नवरात्रि में

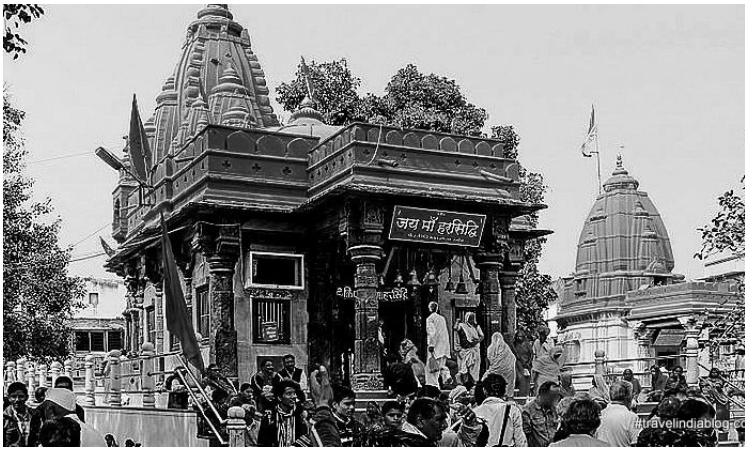

2100 दीप मल्लिका प्रज्जवलित होती हैं। यह मंदिर महाराजा विक्रमादित्य की कुलदेवी हरसिद्धि माता का है। यह महाराजा विक्रमादित्य की आराध्य अधिष्ठात्री देवी हैं।

रहस्यमयी भूखी माता मंदिर

शहर में यूं तो कई मंदिर हैं, लेकिन यहां एक ऐसा मंदिर भी है, जहां प्राचीन समय में हर दिन मानव बलि दी जाती थी। उज्जैन में भूखी माता नाम की इस माता की कहानी सम्राट विक्रमादित्य के राजा बनने की किंवदंती से जुड़ी है। मान्यता है कि भूखी माता को प्रतिदिन एक युवक की बलि दी जाती थी। राजवंश में जो भी जवान लड़के को अवंतिका नगरी का राजा घोषित किया जाता था, भूखी माता उसे खा जाती थी। एक दुखी मां का विलाप देख विक्रमादित्य ने उसे वचन

दिया कि उसके बेटे की जगह वह स्वयं भूखी माता का भोग बनेगा। राजा बनते ही विक्रमादित्य ने पूरे शहर को अति स्वादिष्ट व खुशबू वाले व्यंजनों से सजाने का हुक्म दिया। जगह-जगह मधुर छप्पन भोग सजाए गए। भूखी माता की भूख विक्रमादित्य को अपना आहार बनाने से पहले ही खत्म हो गई और उन्होंने विक्रमादित्य को प्रजापालक चक्रवर्ती सम्राट होने का आशीर्वाद दिया।

श्री ऋण मुक्तेश्वर मंदिर

श्री ऋण मुक्तेश्वर महादेव का मंदिर अति प्राचीन है। यहा मंदिर के प्रांगण में वीरभद्र, दक्ष प्रजापति का शीश और सती माता की प्रतिमा मौजूद है, जहां प्रतिदिन सैकड़ों भक्त इनके कान में आकर अपनी प्रार्थना सुनाते हैं। बताया जाता है कि राजा हरिश्चंद्र ने इस मंदिर की स्थापना की थी। यहां देश-विदेश से आगे वाले भक्त अपनी मुराद पाते हैं। यहां आने वाले श्रद्धालु कर्ज-ऋण से छुटकारा पा लेते हैं तथा धनवान हो जाते हैं।

64 कलाओं की ज्ञानशाला

इस ज्ञानमयी भूमि में भगवान श्रीकृष्ण ने 64 कलाओं का ज्ञान प्राप्त किया था। उज्जयिनी शैक्षणिक दृष्टि से पूर्व से ही विख्यात रही है। शिक्षा स्थली के रूप में यह नगरी नालंदा और काशी के पहले से स्थापित हो गई थी। उज्जयिनी में भगवान श्रीकृष्ण ने अपने भाई बलराम और मित्र सुदामा के साथ महर्षि सान्दीपनी से धनुर्विद्या, अस्त, मंत्रोपनिषद, सहित 64 कलाओं का ज्ञान प्राप्त किया था। भगवान श्रीकृष्ण ने यह संपूर्ण शिक्षा 126 दिन में प्राप्त कर ली थी। जब पूरा संसार अज्ञान, अशिक्षा और अंधकार में भटक रहा था, तब भारत की हृदयस्थली उज्जयिनी में महर्षि सान्दीपनी का गुरुकुल अपने चरण पर था। क्षिप्रा के तट पर ज्ञान से ओत-प्रोत सुविख्यात गुरुकुलों में वेद-वेदांगों, उपनिषदों सहित 64 कलाओं की शिक्षा दी जाती थी।

काल गणना का केंद्र बिन्दु उज्जैन

उज्जयिनी नगरी में काल की सही गणना और ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इस नगरी में महाकाल की स्थापना का रहस्य यही है तथा काल गणना की यही अध्य बिन्दु है। मंगल ग्रह की उत्पत्ति का स्थान भी उज्जयिनी को माना गया है। यहां पर ऐतिहासिक नव-ग्रह मंदिर और वेधशाला की स्थापना से काल-गणना का मध्य बिन्दु होने के प्रमाण मिलते हैं। इस संदर्भ

में यदि उज्जयिनी में लगातार अनुसंधान, प्रयोग और सर्वेक्षण किए जाएं, तो ब्रह्माण्ड के अनेक रहस्यों को भी जाना जा सकता है।

तपोभूमि : माता पार्वती ने यहां किया था तप

सिद्धवट के विषय में यह मान्यता प्रचलित है कि माता पार्वती ने शिव को पति रूप में पाने के लिए यहीं वटवृक्ष की स्थापना की और इसी के नीचे अपना तप शुरु किया। बाद में तप से प्रसन्न होकर शिव ने पार्वती को शिवा के रूप में अथार्त पत्नी रूप में ग्रहण तो किया साथ ही इस वटवृक्ष को भी आशीर्वाद दिया कि इसके नीचे जो भी अपनी इच्छाएं व्यक्त करेगा उसकी मनोकामना पूरी होगी। यहां पर सभी प्रकार के श्रापों, दोषों का निवारण, उद्धार होता है।

पुत्र कार्तिकेय ने भी की यहां तपस्या

भगवान कार्तिकेय ने इसी वटवृक्ष के नीचे तपस्या करके सिद्धियां प्राप्त कीं और ताड़कासुर का वध किया। यही कारण है कि इस सिद्धवट को भगवान शिव शिवा और कार्तिकेय का संरक्षण मिला है। हजारों बरसों की प्रचलित परंपराओं के अनुसार इस वटवृक्ष पर दूध अर्पण किया जाता है। वटवृक्ष पर दूध चढ़ाने से पितृ तृप्त होते हैं। भगवान संतान की इच्छा रखने वालों को संतान भी देते हैं क्योंकि इसी वटवृक्ष से माता पार्वती का गृहस्थ जीवन का सुखद समय शुरु हुआ था।

कर्क रेखा यहीं से गुजरती है

भौगोलिक गणना के अनुसार प्राचीन, आचार्यों एवं खगोलविदों ने उज्जैन को शून्य रेखांश पर माना है। कर्क रेखा भी यहीं से होकर जाती है। इस प्रकार कर्क रेखा और भूमध्य रेखा एक दूसरे को उज्जैन में काटती है। यह भी माना जाता है कि संभवत: धार्मिक दृष्टि से श्री महाकालेश्वर का स्थान ही भूमध्य रेखा और कर्क रेखा के मिलन स्थल पर है। वहीं नाभि स्थल होने से पृथ्वी के मध्य में स्थित है। यह स्थल रहस्यमयी है।

खगोलीय गणना का केंद्र

प्राचीन ग्रीनविच उज्जैन देश के मानचित्र में 23.9 अंश उत्तर अक्षांश एवं 74.75 अंश पूर्व रेखांश पर समुद्र सतह से लगभग 1658 फीट ऊंचाई पर बसी है। इसलिए इसे काल गणना का केंद्र बिन्दु कहा जाता है। यही कारण है कि पुरातन काल से यह नगरी ज्योतिषशास्त्र का प्रमुख केंद्र रही है। इसके प्रमाण राजा जयसिंह के द्वारा स्थापित वेधशाला आज भी इस नगरी को काल गणना के क्षेत्र में अग्रणी सिद्ध करती है।

सिंहस्थ स्नान की परंपरा एवं अन्य स्नान

भारतीय आध्यात्मिक जीवन में जल का बड़ा महत्व है। प्रत्येक उत्सव, धार्मिक कृत्य और पर्व के समय स्नान एक आवश्यक कार्य है। यह स्नान घर अथवा कुए आदि की अपेक्षा समीपवर्ती सरोवर, कुंड या नदी या समुद्र में करना अधिक पुण्यदायक माना जाता है। दैनिक संध्या पूजा में भी जल का होना आवश्यक है।

आचमन मार्जन, तर्पण, देवार्चन सबके लिए जल अपेक्षित है। विशेष पर्वों पर और उनमें भी विशेष स्थानों पर स्नान करना अधिक महत्वपूर्ण है। संवत्सर के आरंभ चंद्र-सूर्य ग्रहण, मकर व मेष की संक्रांति माघ-वैशाख एवं कार्तिक की पूर्णिमा, रामनवमी, कृष्णाष्टमी, गंगा दशहरा आदि के अवसर पर लाखों नर-नारी तीर्थ स्थानों में एकत्र होकर स्नान करते हैं। ग्रहों की विशेष स्थिति पर कुंभ और सिंहस्थ के स्नान की प्रथा इसी परंपरा की महत्वपूर्ण कड़ी है।

सूर्य के ठीक नीचे उज्जैन

संसार के किसी भी शहर में ऐसी स्थिति नहीं है। प्राचीन काल की समय गणना का केंद्र बिन्दु होने के कारण ही काल

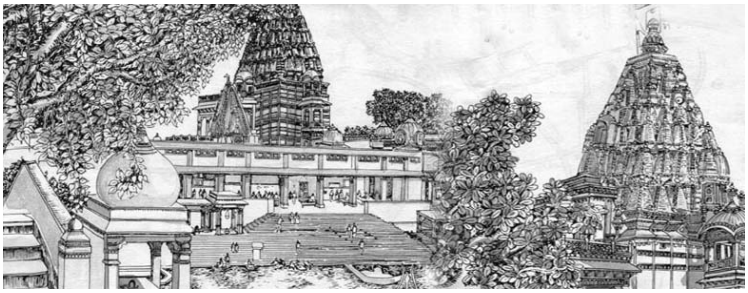

के आराध्य देवता महाकाल हैं जो भारत के द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक है। हिन्दुस्तान की हृदय स्थली उज्जजिनी की भौगोलिक स्थिति रहस्यमयी है खगोलशास्त्रियों की मान्यता है कि उज्जैन नगर पृथ्वी और आकाश के बीच स्थित है। भूत भावन महाकाल को कालजयी मानकर ही उन्हें काल का देवता माना जाता है। काल गणना के लिए मध्यवर्ती स्थान होने के कारण इस नगर का प्राकृतिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, अध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व भी बढ़ जाता है। इन सब कारणों से ही यह नगरी सदैव काल गणना और काल गणनाकृत ग्रंथों, शास्त्रों के लिए उपयोगी रही है। इसलिए इसे भारत का रहस्यमयी स्थानन माना जाता है।

इंद्रेश्वर मंदिर : बंधनमुक्त करने वाला

बाबा महाकाल की नगरी में स्थापित 84 महादेव मंदिरों की श्रृंखला में 35वें क्रम पर एक ऐसा मंदिर है। जो पौराणिक महत्व रखता है। कहा जाता है कि इंद्र को बंधन मुक्त करने वाले श्री इंद्रेश्वर मंदिर में बड़ी तादाद में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। उज्जजिनी महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग उत्तर वाहिनी पवित्र क्षिप्रा, हरसिद्धि शक्तिपीठ, अक्षय वट

गणनायक चिंतामन गणेश तथा शत्रु संहारक काल भैरव की उपस्थिति के कारण ही वंदनीय नहीं बल्कि यहां 84 महादेवों की उपस्थिति ही प्रमाण है। पुराणों में प्रतिष्ठित इन 84 महादेवों के आध्यात्मिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व के साथ ही उनमें जुटी हुई अनेक कथाओं का विस्तृत वृतांत भी सुनने को मिलता है। माना जाता है यहां पर श्रद्धालुओं को बंधन भय नहीं रहता। कोर्ट-कचहरी में विजय प्राप्त होती है।

उज्जैन के प्राचीन, पवित्र नामों की महिमा

वर्तमान नाम उज्जैन उज्जयिनी का ही अपभ्रंश है। प्राचीन ग्रंथों में इसका नाम उज्जयिनी है, वहीं पौराणिक ग्रंथों में इसे अवंतिका नगरी के नाम से जाना जाता है। रोमन इतिहासकार टॉलेमी ने इसे ओजन नाम दिया है। इसके अलावा भी और अन्य नाम इस प्रकार हैं - सुवर्ण श्रृंगार, कुश स्थली, अवंतिका, अमरावत, चूड़ामणि, पद्मावती, शिवपुरी, कुमुन्दती आदि। बोधम्य धर्मसूत्र में इसका नाम अवंति आया है। वहीं स्कंध पुराण का एक भाग अवंति खंड के नाम से प्रसिद्ध है। अवंति क्षेत्र का महत्व धार्मिक ही नहीं अपितु ऐतिहासिक दृष्टि से भी समस्त भारत भूमि में प्रसिद्ध है। प्राचीन काल में मालवा प्रदेश दो भागों में बंटा हुआ था। इसका पूर्वी भाग आकर के नाम से प्रसिद्ध था जिसकी राजधानी विदिशा थी। पश्चिमी भाग अवंति कहलाया था जिसका मुख्यालय उज्जैन था जो आज महाकाल की नगरी सिंहस्थ के रूप में प्रसिद्ध है।

अवंतिका के नामकरण के संबंध में प्राचीन इतिहासकारों ने लिखा है कि कल्पांतर में जब दानवों ने देवगणों को भी पराजित

कर दिया था तब देवता सुमेरू पर्वत पर एकत्र हुए वहां पर उन्हें आकाशवाणी सुनाई दी कि वे सभी कुशस्थली जाएं वहीं उनकी समस्या का समाधान होगा। सभी देवता कुश स्थली गए वहां पर देखा कि वहां सभी लोग सदाचारी, ऋषि गंधर्व, महात्मा साधु-संत सभी तपस्यारत हैं।चारों तरफ सुख-शांति है चूंकि प्रत्येक कालखंडों में यह स्थान देवताओं के तीर्थ के रूप में औषधियों के भंडार के रूप में यह भूमि प्राणियों का रक्षण करती आई है। अत: इसलिए इसे सभी लोग अवंतिका नाम से जानते हैं।

समुद्र तल से 1698 फीट ऊंचाई पर स्थित उज्जैन

पवित्र नगरी उज्जैन उत्तर की ओर चंबल की सहायक नदी क्षिप्रा के पूर्वी तट पर समुद्र तल से काफी ऊंचाई पर बसा है यह प्राचीन नगरी 1698 फीट की ऊंचाई पर है। यह नगरी वर्तमान शहर से 2 मील उत्तर की ओर कोसों दूर तक फैली है। भूगर्भ में समाई यह पवित्र भूमि भूकंप अथवा क्षिप्रा की असाधारण बाढ़ से नष्ट हो गई। तब लोग दक्षिण की ओर व्यवस्थापित हो गए ऐसा इतिहासकारों ने ऐतिहासिक ग्रंथों के आधार पर लिखा है कि पुरानी बस्ती का दाहिना भाग गढ़ के नाम से प्रसिद्ध था। इसका प्रमाण भी खुदाई के दौरान प्राप्त हुआ है। छटी शताब्दी से इस पवित्र नगरी का ऐतिहासिक महत्व बढ़ना प्रारंभ हुआ। संपूर्ण भारत उस समय 16 खंडों में विभक्त था। इन 16 खंडों में से एक खंड अवंतिका था। उत्तरी व दक्षिणी खंड की राजधानी उज्जैन तथा अहिस्मती थी।

नाग चंद्रेश्वर का अद्‌भुत रहस्य

महाकाल मंदिर की तीसरी मंजिल पर स्थित नाग चंद्रेश्वर मंदिर महाकाल मंदिर की ही तरह प्राचीन एवं ऐतिहासिक है। भारत स्थित नागों के अनेक मंदिरों में से नाग चंद्रेश्वर मंदिर अपनी अद्‌भुत परंपराओं के कारण विख्यात है। इस मंदिर की विशेषता है कि यह मंदिर पूरे वर्ष में सिर्फ एक दिन के लिए ही खुलता है। अर्थात श्रावण शुक्ल पंचमी नागपंचमी पर ही दर्शनार्थी नागेश्वर भगवान के दर्शन करते हैं। इस मंदिर से संबंधित जुड़ी मान्यता है कि स्वयं नागराज तक्षक इस पवित्र मंदिर में सदैव मौजूद रहते हैं। इस मंदिर में एक अद्‌भुत प्रतिमा विराजमान है जो कि 11वीं शताब्दी के है। इसमें आसन पर शिव-पार्वतीजी फनफैलाए हुए नाग के आसन पर विराजमान हैं। इस प्रतिमा के संबंध में कहा जाता है कि यह प्रतिमा नेपाल से लाई गई थी। उज्जैन के अतिरिक्त दुनिया में कहीं भी ऐसी प्रतिमा देखने को अभी तक नहीं मिली ऐसा इतिहासकारों का दावा है। मान्यता के अनुसार इस मंदिर के दर्शन करने के बाद प्राणी किसी भी प्रकार के सर्पदोष, सर्पभय तथा सर्पश्राप से जन्म जन्मांतरों की मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

त्रिवेणी शनि मंदिर

शनि को न्याय के देवता के रूप में जाना जाता है। मान्यता है कि जब शनि बच्चे के रूप में थे तब उन्होंने अपनी आंखें खोली तो सूरज को ग्रहण लग गया। वैसे तो शनि को विश्व में सबसे बड़े शिक्षक के रूप में जाना जाता है। बुराई अन्याय को सहन न करने वाले और सम्पूर्ण न्याय के द्योतक माने जाते हैं। उज्जैन में शनिदेव के दर्शन त्रिवेणी शनि मंदिर में प्रत्यक्ष स्वरूप में होते हैं। यहां शनि को गहरे काले कपड़े, तलवार पकड़े, तीर और दो खंजर उठाए दिखाया है। पिता- सूर्य, माता - छाया (सुवर्णा), भाई- मनु अश्विनी कुमार, बहन - यमुना, ताप्ती, भद्रा, शिक्षक - भगवान सूर्य।

शनि के साथ पिता सूर्य का मंदिर

9 प्रमुख खगोलीय पिंडो (ग्रह) हिन्दू खगोल विज्ञान के नवग्रह मंदिरों, नवग्रह के लिए समर्पित मंदिर है। ये खगोलीय पिंडों सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु, बुध, शुक्र, शनि, राहु। दक्षिण भारत में कई मंदिरों के बीच एक मंदिर नवग्रहों के लिए समर्पित होते हैं, लेकिन उज्जैन का शनि मंदिर सभी ग्रहों के साथ मिलकर एक जगह संयुक्त रूप से स्थापित है, जिनका अपना वैज्ञानिक महत्व है। इस मंदिर की खासियत यह है कि पिता सूर्य और पुत्र शनि दोनों ही विपरीत अर्थात- एक दूसरे की पीठ के पीछे स्थित हैं।

अन्य ग्रह आसपास परिक्रमा स्थल पर हैं। नवग्रह शांति के साथ ही पवित्र क्षिप्रा किनारे स्थित होने के पीछे इसके पौराणिक कथाओं का भी वर्णन मिलता है।

सिंहस्थ की महिमा

12 वर्षों में एक बार लगने वाले इस मेले में आने के लिए देवता भी इंतजार करते हैं। इसका धार्मिक, ज्योतिषीय और वैज्ञानिक आधार भी है।

धार्मिक दृष्टि से

अवंतिका को सप्तपुरियों में सबसे बड़ा माना गया है। ज्योतिर्लिंग भगवान महाकालेश्वर यहां विराजित हैं। 84 महादेव गया तीर्थ, मां हरसिद्धि शक्तिपीठ, षडविनायक यहां स्थित हैं। मोक्षदायिनी क्षिप्रा का पावन तट, महामंगल की जन्मभूमि और तंत्र की उर्वरा भूमि यहां है।

ज्योतिषीय दृष्टि से

मेष राशि का सूर्य और सिंह राशि का बृहस्पति में आना, यह संयोग 12 वर्ष में एक बार ही आता है। क्षिप्रा स्नान और अवंतिका को पृथ्वी का नाभिकेंद्र माना गया है, जो इसे खास बनाता है।

देवताओ के साथ स्नान का पर्व

उज्जयिनी के पूर्ण कुंभ योग के दस प्रमुख अंग– अवंतिका वैशाख शुक्ल पक्ष सिंह राशि में गुरु, मेष राशि में सूर्य, तुला राशि का चंद्र, स्वाती नक्षत्र पूर्णिमा तिथि व्यातिपात योग,

सोमवार। परन्तु कालचक्र वश उज्जयिनी के आगामी सिंहस्थ महाकुंभ योग में इनमें से कोई अंग उपलब्ध नहीं होंगे। ऐसी अवस्था में प्राचीन परंपराओं का अनुसरण करते हुए स्थानीय विद्वान और धर्माचार्य निर्णय लेते हैं।

विक्रमादित्य की नगरी

उज्जैन एक नगर ही नहीं बल्कि समूची सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक है, यह मंगल ग्रह की जन्मभूमि भी है और भगवान

श्रीकृष्ण–बलराम और उनके सखा सुदामा के अद्भुत दिव्य दर्शन की साक्षी, महर्षि संदीपनी के आश्रम की भी गवाह है। इसी के साथ इस नगरी के सम्राट विक्रमादित्य थे। पूरे विश्व की कालगणना के केंद्र और विक्रम संवत भी यहीं से प्रारंभ हुआ। सम्राट विक्रमादित्य के भाई राजा भर्तहरि की यह

तपोस्थली है। राजा जयसिंह ने नक्षत्रों के अध्ययन के लिए यहां वेधशाला का निर्माण किया था। वेद व्यास और महाकवि कालिदास ने जिस नगरी की प्रशस्ति गाई हो जिस नगरी में देवताओं की भी आस्था हो, ऐसी महान नगरी जो मंदिरों, मूर्तियों, ऐतिहासिक कथाओं, पर्वों और उल्लास की नगरी हो, ऐसी दिव्य नगरी में सिंहस्थ पर्व का आयोजन होना, देवताओं के स्वर्ग की अनुभूति कराती है। विभिन्न खगोलीय घटनाओं का यह केंद्र बिन्दु है। कर्क रेखा यहीं से होकर गुजरती है, इन्हीं खास कारणों से सिंहस्थ का सर्वाधिक महत्व है।

इस कुंभ की मुख्य पर्व तिथि अक्षय तृतीया

पुराण वाक्यानुसार वैशाख माह में शुक्ल पक्ष के समय जब सूर्य मेष राशि में हो तथा गुरु सिंह राशि में हो सोमवार का दिन हो, स्वाती नक्षत्र, व्यतिपात योग तथा पूर्णिमा तिथि के संयोग होने पर अमृत कुंभ योग बनता है। जो कि तारीख 9 मई अक्षय तृतीया के दिन इनमें से 6 योगों का पर्व योग रहेगा। पर्व के देवता सूर्य एवं उपदेवता वरुण देव होंगे। इस दिन अमृत कुंभ योग में पुण्यकाल, स्नानकाल सूर्योदय से सूर्यास्त तक रहेगा।

कर्क रेखा

यह रेखा पृथ्वी पर उन पांच प्रमुख अक्षांश रेखाओं में से एक हैं जो पृथ्वी के मानचित्र पर परिलक्षित होती हैं। कर्क रेखा पृथ्वी की उत्तरतम अक्षांश रेखा हैं, जिसपर सूर्य दोपहर के समय लम्बवत चमकता हैं। यह घटना जून क्रांति के समय होती है, जब उत्तरी गोलार्ध सूर्य के समकक्ष अत्यधिक झुक जाता है। इस रेखा की स्थिति स्थायी नहीं हैं वरन इसमें समय के अनुसार हेर-

फेर होता रहता है। 22 जून को जब सूर्य इस रेखा के एकदम ऊपर होता है, उत्तरी गोलार्ध में वह दिन सबसे लंबा व रात सबसे छोटी होती है। यहां इस दिन सबसे अधिक गर्मी होती है (स्थानीय मौसम को छोड़कर), क्योंकि सूर्य की किरणें यहां एकदम लंबवत पड़ती हैं। कर्क रेखा के सिवाय उत्तरी गोलार्ध के अन्य उत्तरतर क्षेत्रों में भी किरणें अधिकतम लंबवत होती हैं। इस समय कर्क रेखा पर स्थित क्षेत्रों में परछाईं एकदम नीचे छिप जाती है या कहें कि नहीं बनती है। इस कारण इन क्षेत्रों को अंग्रेज़ी में नो शैडो ज़ोन कहा गया है।

इसी के समानान्तर दक्षिणी गोलार्ध में भी एक रेखा होती है जो मकर रेखा कहलाती हैं। भूमध्य रेखा इन दोनो के बीचो-बीच स्थित होती हैं। कर्क रेखा से मकर रेखा के बीच के स्थान को उष्णकटिबन्ध कहा जाता हैं। इस रेखा को कर्क रेखा इसलिए कहते हैं क्योंकि जून क्रांति के समय सूर्य की स्थिति कर्क राशि में होती हैं। सूर्य की स्थिति मकर रेखा से कर्क रेखा की ओर बढ़ने को उत्तरायण एवं कर्क रेखा से मकर रेखा को वापसी को दक्षिणायन कहते हैं। इस प्रकार वर्ष 6-6 माह के में दो अयन होते हैं।

खगोल शास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र

चन्द्र संबंधी खगोल शास्त्र: यह बडा क्रेटर है डेडलस यान 1969 में चन्द्रमा की प्रदक्षिणा करते समय अपोलो 11 के चालक-दल ने यह चित्र लिया था। यह क्रेटर पृथ्वी के चन्द्रमा के मध्य के नज़दीक है और इसका व्यास लगभग 93 किलोमीटर या 58 मील है।

खगोल शास्त्र, एक ऐसा शास्त्र है जिसके अंतर्गत पृथ्वी और उसके वायुमण्डल के बाहर होने वाली घटनाओं का अवलोकन, विश्लेषण तथा उसकी व्याख्या की जाती है। यह वह अनुशासन है जो आकाश में अवलोकित की जा सकने वाली तथा उनका समावेश करने वाली क्रियाओं के आरंभ, बदलाव और भौतिक तथा रासायनिक गुणों का अध्ययन करता है।

बीसवीं शताब्दी के दौरान, व्यावसायिक खगोल शास्त्र को अवलोकिक खगोल शास्त्र तथा काल्पनिक खगोल तथा भौतिक शास्त्र में बाँटने की कोशिश की गई है। बहुत कम ऐसे खगोल शास्त्री है जो दोनो करते है क्योंकि दोनो क्षेत्रों में अलग अलग प्रवीणताओं की आवश्यकता होती है, पर ज़्यादातर व्यावसायिक खगोलशास्त्री अपने आप को दोनो में से एक पक्ष में पाते है।

खगोल शास्त्र ज्योतिष शास्त्र से अलग है। ज्योतिष शास्त्र एक छद्म-विज्ञान है जो किसी का भविष्य ग्रहों के चाल से जोड़कर बताने कि कोशिश करता है। हालाँकि दोनों शास्त्रों का आरंभ बिंदु एक है फिर भी वे काफ़ी अलग है। खगोल शास्त्री जहाँ वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करते हैं जबकि ज्योतिषी केवल अनुमान आधारित गणनाओं का सहारा लेते हैं।

उज्जैन का परिचय

भारतीय संस्कृति की धरोहर, मोक्षदायिनी सप्तपुरियों में एक उज्जयिनी, महाकाल की उपस्थिति से अत्यन्त पावन, महिमा मण्डित, विक्रम के शौर्य-पराक्रम से दिग-दिगन्त में देदीप्यमान और कवि कुलगुरु कालिदास के काव्यलोक से सम्पूर्ण विश्व में गौरवान्वित नगरी है। स्कन्द पुराण में इसको 'प्रतिकल्पा' के नाम से सम्बोधित किया है, जो सृष्टि के आरम्भ में उसकी उत्पत्ति का प्रतीक है। वेदों एवं उपनिषदों में भी उज्जयिनी का धार्मिक दृष्टि से सब जगह वर्णन किया गया है।

महाभारत काल में भारतवर्ष जब सौरव्य व उत्कर्ष के शिखर पर पहुँच चुका था। उस समय भी उज्जयिनी का महत्व बहुत बढ़ा हुआ था और उज्जयिनी में एक प्रसिद्ध विद्यापीठ विद्यमान था। उज्जयिनी का वर्णन प्राचीन वाङ्मय के कवि और लेखकों की रचनाओं में भी पाया जाता है जैसे- कालिदास, बाण, व्यास, शूद्रक, भवभूति, विल्हण, अमरसिंह, परिगुप्त आदि। उज्जयिनी को धार्मिक पवित्रता का महत्व प्राप्त होने के निम्न विशेष कारण हैं। इसी तरह मोक्ष देने वाली सप्तपुरियों में से उज्जैन प्रमुख है।

श्मशान ऊर्वर क्षेत्रं पीठं तु वनमेव च।
पञ्चैके न लभ्यंते महाकाल बनाद्रते।।

अर्थात् उज्जैन में (1) श्मशान , यानी भगवान् के रमण करने की जगह (2) उर्वर, यानी जहाँ मृत्यु होने पर मोक्ष मिलता है। (3) क्षेत्र अर्थात् जहॉ सब पापों का विनाश होता है। (4) जहॉ 'पीठ' है मतलब हरसिद्धि जी व अन्य मातृकाओं का स्थान

है। (5) जहाँ महाकाल का निवास स्थान है, ऐसी पाँच महान बातों का योग पृथ्वी पर सिवाय उज्जैन के और कहीं नहीं है। अत: पुष्करराज आदि जितने तीर्थ इस पृथ्वी पर हैं वे सब तीर्थ महाकाल वन अर्थात् अवन्तिकापुरी में विद्यमान हैं। कई लाख वर्ष काशीवास करने से जो फल मिलता है। वह फल वैशाख मास में मात्र पाँच दिन अवन्तिका में वास करने से मिलता है।

प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य पाणिनी ने अष्टाध्यायी में भी अवन्ति जनपद का उल्लेख स्त्रीलिंग के अन्तर्गत कुन्ति और करू के साथ किया है। महाभारत में भी अवन्ति का यत्र-तत्र उल्लेख मिलता है। पद्मपुराण मत्स्यपुराण भागवतपुराण में अवन्ति का उल्लेख आया है।

धार्मिक साहित्य ग्रंथो के अतिरिक्त प्राचीन लौकिक साहित्य में भी अवन्ति का विवरण मिलता है। वात्स्यायन के कामसूत्र, वराहमिहिर की वृहतसंहिता, भारत के नाट्यशास्त्र, बाण भट्ट की कादम्बरी, कालीदास के मेघदूत में अवन्ति के सन्दर्भ मिलते हैं। अभिलेखों में सर्वप्रथम गौतमी बलश्री के नासिक अभिलेख में अवन्ति एवं आकार प्रदेश का उल्लेख साथ-साथ हुआ है। जो कि सातवाहन शासक वासिष्ठी पुत्र पुलभावी के राज्यकाल (ई. सन 130-155) में उत्कीर्ण करवाया गया था। शक नरेश रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में पूर्व एवं अपर आकरावन्ति का उल्लेख है। पूर्व एवं अपद से तात्पर्य पूर्व एवं पश्चिम से रहा होगा। छठवीं शताब्दी के आरम्भ में वाकाटक नरेश हरिषेण के अजन्ता अभिलेख में अवन्ति का प्रदेश सूचक उल्लेख है। नवीं शताब्दी में अवन्ति का एक प्रदेश के रूप में पाल सम्राट धर्मपाल ने खालिमपुर ताम्रपत्रों में उल्लेख किया गया है।

क्षिप्रा का महत्व

क्षिप्रा नदी के तट पर यह नगर बसा होने से विशेष पवित्र माना जाता है। क्षिप्रा का ऐसा महत्व है कि इसके समान पावन करने वाली कोई नदी नहीं है और दूसरा स्थान नहीं है। उज्जयिनी में 12 वर्ष में एक बार सिंहस्थ कुम्भ महापर्व का मेला क्षिप्रा तट पर लगता है। उस समय क्षिप्रा स्नान का विशेष महत्व वर्णित है। क्षिप्रा मालव देश की सुप्रसिद्ध और पवित्र नदी है। तेज बहने वाली नदी होने के कारण इसका नाम क्षिप्रा पड़ा। स्मृतियों पुराणों तथा अन्य ग्रन्थों में तो नारायण शब्द के मूल में जल की स्थिति ही प्रतिपादित की गई है। ऐसी ही शान्ति एवं स्फूर्ति प्रदान करने वाली तथा संस्कृति का इतिहास रचने वाली नदी है 'क्षिप्रा'। जिसके सम्बन्ध में समुचित ही कहा गया है-

क्षिप्रायाश्च कथां पुण्यां पवित्रं पापहारिणीम्।

यह पवित्र नदी वैकुण्ठ में क्षिप्रा, स्वर्ग में ज्वरन्श्री, यमपुरी में पापाग्नि तथा पाताल में अमृतसम्भवा वराह कल्प में 'धेनुजा' नाम से विख्यात है।

क्षिप्रा की उत्पत्ति के आख्यान पौराणिक आख्यान-

क्षिप्रा की उत्पत्ति सम्बन्धी कथा का विशद विवेचन स्कन्दपुराण के अवन्ती क्षेत्र माहात्म्य खण्ड में प्राप्त है। अन्य पुराण तो इस सम्बन्ध में प्रायः मौन हैं, केवल मात्र एक दो पुराण में अवश्य ही इस सम्बन्ध में कुछ उल्लेख है, किन्तु वह भी संकेत मात्र है।

स्कन्द पुराण में वर्णित क्षिप्रा उत्पत्ति गाथा को देखने से प्रतीत होता है कि पुराण के रचयिता या सम्पादक ने क्षिप्रा सम्बन्ध तत्युगीन प्राय: सभी प्रचलित मान्यताओं को अपने ग्रन्थ में समाहित कर लिया था। सम्भवत: यही कारण है कि पुराण में क्षिप्रा उत्पत्ति सम्बन्धी आख्यान एक नहीं अनेक हैं। उत्पत्ति सम्बन्धी गाथाओं का संक्षिप्त विवरण निम्न है-

एक समय शिवजी ने ब्रह्म-कपाल लेकर भिक्षार्थ भगवान विष्णु को अँगुली दिखाते हुए भिक्षा प्रदान की। शंकर यह सहन न कर सके और उन्होंने तत्काल ही अपने त्रिशूल से उस अँगुली पर प्रहार कर दिया, जिससे रक्त धारा प्रवाहित होने लगी। वही धारा क्षिप्रा नदी के रूप में प्रवाहित होने लगी। इस प्रकार त्रैलोक्य पावनी क्षिप्रा बैकुण्ठ से अद्भुत हो तीनो लोकों में प्रसिद्ध हो गई।

आख्यान से सम्बन्धित पुरातत्वीय चिन्तन

क्षिप्रा उद्भव सम्बन्धित उपरि-आख्यान के सम्बन्ध में पुरविद् वि.श्री. वाकणकर ने अपने आलेख में ''पुण्य सलिला क्षिप्रा'' में पुरातात्विक दृष्टि से चिन्तन कर लिखा है कि विंध्याचल क्षेत्र की पर्वतश्रेणी में जल अवरूद्ध है। अत: उन्होंने उस पर्वत श्रेणी से छिद्र कर अवरूद्ध जल राशि सोपानाश्म (डेक्कन ट्रैप) की क्षरित लाल मिट्टी पर प्रवाहित होने लगी। फलस्वरूप प्रवाहित जल रक्त वर्णी हो गया। संभावना है कि लेटराइट मिट्टी के कारण उद्गम पर क्षिप्रा जल रक्तवर्णी हुआ है।

क्षिप्रा की उत्पत्ति

मोक्षदायनी नदी क्षिप्रा नदी का काफी पौराणिक महत्व है और यह मध्य प्रदेश की धार्मिक और ऐतिहासिक नगरी उज्जैन से होकर गुजरती है। उज्जैन की क्षिप्रा नदी, जहां हर 12 वर्ष बाद सिंहस्थ कुंभ का आयोजन किया जाता है। कुंभ विश्व का सबसे बड़ा मेला है। एक किंवदंती के अनुसार क्षिप्रा नदी विष्णु जी के रक्त से उत्पन्न हुई थी।

ब्रह्मपुराण में भी क्षिप्रा नदी का उल्लेख मिलता है। संस्कृत के महाकवि कालिदास ने अपने काव्य ग्रंथ मेघदूत में क्षिप्रा का प्रयोग किया है, जिसमें इसे अवंति राज्य की प्रधान नदी कहा गया है। महाकाल की नगरी उज्जैन, क्षिप्रा के तट पर बसी है। स्कंद पुराण में क्षिप्रा नदी की महिमा लिखी है। पुराण के अनुसार यह नदी अपने उद्गम स्थल बहते हुए चंबल नदी से मिल

जाती है। प्राचीन मान्यता है कि प्राचीन समय में इसके तेज बहाव के कारण ही इसका नाम क्षिप्रा प्रचलित हुआ।

क्षिप्रा नदी का उद्गम स्थल मध्यप्रदेश के महू छावनी से लगभग 17 किलोमीटर दूर जानापाव की पहाडियों से माना गया है। यह स्थान भगवान विष्णु के अवतार भगवान परशुराम का जन्म स्थान भी माना गया है।

क्षिप्रा नदी के किनारे स्थित सांदीपनी आश्रम में भगवान श्रीकृष्ण, बलराम और उनके प्रिय मित्र सुदामा ने विद्या अध्ययन किया था। हिंदू धर्मग्रंथों में वर्णित है कि राजा भर्तृहरि और गुरु गोरखनाथ ने भी इस पवित्र नदी के तट पर तपस्या से सिद्धि प्राप्त की।

क्षिप्रा, गंगा, सरस्वती और नर्मदा आदि ऐसी अनेक नदियां हैं, जो पवित्र मानी जाती हैं। ये नदियां ना तो मैली होती हैं और ना ही इनका जल अशुद्ध होता है। उज्जैन में मां क्षिप्रा का काफी पौराणिक महत्व है।

स्वर्गलोक का खुला द्वार - भविष्य पुराण के अनुसार स्नान के पुण्य स्वरूप स्वर्ग मिलता है ओर मोक्ष की प्राप्ति होती है। इन्हीं सभी मान्यताओं का ही परिणाम है कि कुंभ मेले के दौरान खासतौर से विशेष स्नान तिथियों का आयोजन किया जाता है। मुहूर्त के अनुसार खास तिथियां निकाली जाती हैं जिसके आधार पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु स्नान तट पर एकत्रित होते हैं तथा अपने पापों का विसर्जन करते हैं।

पृथ्वी लोक में चार, स्वर्गलोक में आठ कुंभ

कुंभ मेले की भारतीय परम्परा मात्र एक मेले के रूप में नहीं, वरन् उत्सव के रूप में मनायी जाती है। यह एक ऐसा मेला है जहां लोग श्रद्धा के सागर में उपासना की डुबकी लगाते नजर आते हैं। लेकिन आज भी लोग पूर्ण रूप से कुंभ मेले की मान्यता, इससे जुड़े इतिहास एवं महत्व को समझ नहीं पाए हैं।

सनातन धर्म का पौराणिक पर्व– इतना ही नहीं, लोग शायद यह भी नहीं जानते कि वास्तव में कितने कुंभ मेले प्रचलित हैं और कितने मनुष्य जाति द्वारा मनाए जाने के लिए अधिकृत हैं। यह एक ऐसा पर्व है जो हिन्दू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण पर्व में से एक है। यह मेला अपने पौराणिक इतिहास के साथ कुंभ पर्व स्थलों के कारण भी काफी प्रसिद्ध है।

पृथ्वी पर चार स्थान– भारत में केवल चार ऐसे स्थल हैं जहां कुंभ मेले का एक बड़े स्तर पर आयोजन किया जाता है। लेकिन केवल चार ही क्यों? चार से कम या ज्यादा क्यों नहीं? और केवल यही चार स्थल क्यों? इनके अलावा किसी अन्य स्थल पर कुंभ मेले का आयोजन करना सही क्यों नहीं माना जाता?

समुद्र में मंथनी– कहते हैं यह कथा देव–दानवों द्वारा समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कुंभ से गिरी अमृत बूंदों से बंधी है, जिसके कारण ही कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। इस कथा के अनुसार अपने क्रोध का ताप रोक ना पाने वाले महर्षि दुर्वासा

ने एक बार देवराज इंद्र एवं अन्य महान देवताओं को शाप दे दिया था।

दुर्वासा ऋषि का शाप– शाप के असर से सभी देवता कमजोर हो गए, जिसके फलस्वरूप दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण करना आरंभ कर दिया। दैत्यों के इस दुष्ट प्रभाव से हताश होकर सभी देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए और उनसे दैत्यों से छुटकारा पाने के लिए विनती करने लगे। देवताओं की तकलीफ को समझते हुए भगवान विष्णु ने उनसे दैत्यों के साथ मिलकर ही एक कार्य करने को कहा।

कुंभ का मोहिनी रूप – कहते हैं उस समय चंद्रमा ने घट से प्रस्रवण होने से, सूर्य ने घट फूटने से, गुरु ने दैत्यों के

अपहरण से एवं शनि ने देवेन्द्र के भय से घट की रक्षा की। इस कलह को शांत करने के लिए भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण किया और यथाधिकार सबको अमृत बांटकर पिला दिया। इस प्रकार देव–दानव युद्ध का अंत किया गया।

एक दिन एक वर्ष के समान- इस कथा के अनुसार अमृत प्राप्ति के लिए देव-दानवों में पूरे बारह दिन तक युद्ध हुआ था, लेकिन पृथ्वी लोक में स्वर्ग लोक का एक दिन एक वर्ष के बराबर माना जाता है। इसलिए कुंभ भी बारह होते हैं। उनमें से चार कुंभ पृथ्वी पर होते हैं और शेष आठ कुंभ देवलोक में होते हैं।

देवता मनाते हैं आठ कुंभ - मनुष्य जाति को अन्य आठ कुंभ मनाने का अधिकार नहीं है। यह कुंभ वही मना सकता है जिसमें देवताओं के समान शक्ति एवं यश प्राप्त हो। यही कारण है कि शेष आठ कुंभ केवल देवलोक में ही मनाए जाते हैं।

सूर्य और गुरु का एंगल-कुंभ मेले में सूर्य एवं बृहस्पति का खास योगदान माना जाता है इसलिए इनके एक राशि से दूसरे राशि में जाने पर ही कुंभ मेले की तिथि का चयन किया जाता है। मान्यतानुसार जब सूर्य मेष राशि और बृहस्पति कुंभ राशि में आता है, तब यह मेला हरिद्वार में मनाया जाता है।

राशियां भी महत्वपूर्ण - परन्तु जब बृहस्पति वृषभ राशि में प्रवेश करता है और सूर्य मकर राशि में होता है, तो कुंभ का यह उत्सव प्रयाग में मनाया जाता है। इसके अलावा जब बृहस्पति और सूर्य दोनों ही वृश्चिक राशि में प्रवेश करें तो यह मेला उज्जैन में मनाया जाता है।

कुछ पुरानी मान्यताएं - किन्तु जब बृहस्पति और सूर्य सिंह राशि में होते हैं तब यह महान कुंभ मेला महाराष्ट्र के नासिक में मनाया जाता है। केवल इन स्थानों पर उत्सव मनाने का ही नहीं, बल्कि यहां आकर विभिन्न कार्यों को करने के पीछे भी कई मान्यताएं बनाई गई हैं।

श्रद्धा-भक्ति का महत्व- कहते हैं कुंभ मेले के दौरान श्रद्धा भाव सबसे उच्चतम माना जाता है। जो जितनी ज्यादा श्रद्धा से यहां आता है उसकी उतनी ही मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इन मान्यताओं की उत्पत्ति हिन्दू धर्म के विभिन्न पौराणिक ग्रंथों में उल्लिखित है।

स्नान का महत्व - स्कन्द पुराण के अनुसार कुंभ मेले के दौरान भक्ति भावपूर्वक स्नान करने से जिनकी जो कामना होती है, वह निश्चित रूप से पूर्ण होती है। अग्निपुराण में कुंभ मेले को गौ दान से भी जोड़ा गया है। इसमें कहा गया है कि इस उत्सव में श्रद्धापूर्वक स्नान करने से वही फल प्राप्त होता है जो करोड़ों गायों का दान करने से मिलता है।

ब्रह्म पुराण में कुंभ -ब्रह्म पुराण में कहा गया है कि स्नान करने से अश्वमेध यज्ञ जैसा फल मिलता है और मनुष्य सर्वथा पवित्र हो जाता है। पौराणिक मान्यतानुसार अश्वमेध यज्ञ संसार के सभी यज्ञों में सबसे उत्तम यज्ञ माना गया है।

मोक्षदायी स्नान - इसके अलावा कुंभ मेले में स्नान करने हेतु मोक्ष प्राप्ति का भी फल प्राप्त होना माना गया है। कूर्म पुराण के अनुसार इस उत्सव में स्नान करने से सभी पापों का विनाश होता है और मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं। यहां स्नान से देवलोक भी प्राप्त होता है।

सिंहस्थ : प्राकृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक समरस्ता का विज्ञान

सिंहस्थ उज्जैन का महान स्नान पर्व है। बारह वर्षों के अंतराल से यह पर्व तब मनाया जाता है जब बृहस्पति सिंह राशि पर स्थित रहता है। पवित्र क्षिप्रा नदी में पुण्य स्नान की विधियां चैत्र मास

की पूर्णिमा से प्रारंभ होती हैं और पूरे मास में वैशाख पूर्णिमा के अंतिम स्नान तक भिन्न-भिन्न तिथियों में सम्पन्न होती है। उज्जैन के महापर्व के लिए पारम्परिक रूप से दस योग महत्वपूर्ण माने गए हैं।

सनातन काल से स्वयमेव आयोजित होने वाला सिंहस्थ एक बार फिर पूरी दुनिया को आमंत्रित कर रहा है। सिंहस्थ एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है अपितु यह दर्शन, विज्ञान एवं संस्कृति का वह अनुष्ठान है जिसमें समय काल के गुजरने के साथ-साथ नए तत्व एवं संदर्भों की तलाश की जाती है। विज्ञान ने समय के साथ प्रगति की है तो उसकी प्रगति में प्राचीनकाल से होने वाले सिंहस्थ जैसे आयोजन बुनियाद में रहे हैं। इसी तरह दर्शन की दृष्टि से भी यह आयोजन व्यापक महत्व वाला है। सांसारिक व्यक्ति को एक समय के बाद शांति और मोक्ष की तलाश होती है। वह परोक्ष और अपरोक्ष रूप से की गई अपनी गलतियों को सुधारने का अवसर चाहता है। उसे इस बात का अहसास होता है कि 12 वर्षों के अंतराल में होने वाला यह सिंहस्थ उन गलतियों के पश्चाताप के लिए एक अवसर है। वह यहां मोक्ष की कामना के साथ आता है और मन में एक विश्वास लेकर जाता है कि सिंहस्थ का यह स्नान उसे मोक्ष प्रदान करने में सहायता करेगा। विश्वास के भाव को आप अंधविश्वास कह सकते हैं लेकिन मानव के भीतर टूटते, दरकते आत्मविश्वास को सिंहस्थ दुबारा से संचित करता है, सृजित करता है और इसे आप दर्शन के रूप में जांच-परख सकते हैं।

उज्जैन सिंहस्थ का अनादिकाल से साक्षी रहा है। महाकाल यहां बिराजते हैं। काल भैरव की आराधना और माता की

जयकारा की गूंज धर्म-धम्म से परिचय कराती है तो इस बात की तलाश करते हुए सदियां निकल गई और कोई इस बात की तलाश नहीं कर पाया कि आखिर काल भैरव द्वारा सेवन की जाने वाली मदिरा कहां चली जाती है। महाकाल में प्रतिदिन होने वाले भस्म आरती भी उन लोगों के लिए अबूझ पहेली बनी हुई है जो तर्क के साथ जीत जाने के लिए जुटे हुए हैं। सिंहस्थ में भी ऐसे लोगों की तादाद कम नहीं होती है जो अपने तर्कों के साथ उन तथ्यों को तलाश करने चले आते हैं जिनका जवाब उनके स्वयं के पास नहीं होता है।

सिंहस्थ महाकुंभ महापर्व पर देश और विदेश के भी साधु-महात्माओं, सिद्ध-साधकों और संतों का आगमन होता है। इनके सानिध्य में आकर लोग अपने लौकिक जीवन की समस्याओं का समाधान खोजते हैं। इसके साथ ही अपने जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाकर मुक्ति की कामना भी करता है। मुक्ति को अर्थ ही बंधनमुक्त होना है और मोह का समाप्त होना ही बंधनमुक्त होना अर्थात मोक्ष प्राप्त करना है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के चार पुरुषार्थों में मोक्ष ही अंतिम मंजिल है। ऐसे महापर्वों में ऋषिमुनि अपनी साधना छोड़कर जनकल्याण के लिए एकत्रित होते हैं। वे अपने अनुभव और अनुसंधान से प्राप्त परिणामों से जिज्ञासाओं को सहज ही लाभान्वित कर देते हैं। इस सारी पृष्ठभूमि का आशय यह है कि कुंभ-सिंहस्थ महाकुंभ जैसे आयोजन चाहे स्वरस्फूर्त ही हों, लेकिन वह उच्च आध्यात्मिक चिंतन का परिणाम है और उसका सुविचारित ध्येय भी है।

विज्ञान एवं दर्शन तथ्य एवं तर्कों की कसौटी पर खरा उतरने के बाद किसी निष्कर्ष पर पहुंचता है और संभवत: विज्ञान एवं

दर्शन ने इस बात को परख लिया है कि उज्जैन में जो कुछ घटता है, वह अवैज्ञानिक है। काल गणना एक वैज्ञानिक पद्धति है और काल गणना के अनुरूप सिंहस्थ का आयोजन प्रति 12 वर्षों के अंतराल में किया जाता है। भारतीय संस्कृति, आस्था और विश्वास के प्रतीक कुंभ का उज्जैन के लिए केवल पौराणिक कथा का आधार ही नहीं, अपितु काल चक्र या काल गणना का वैज्ञानिक आधार भी है। भौगोलिक दृष्टि से अवंतिका–उज्जयिनी या उज्जैन कर्कअयन एवं भूमध्य रेखा के मध्य बिंदु पर अवस्थित है। बारह वर्षों के अंतराल से यह पर्व तब मनाया जाता है जब बृहस्पति सिंह राशि पर स्थित रहता है। प्रत्येक स्थान पर बारह वर्षों का क्रम एक समान हैं अमृत–कुंभ के लिए स्वर्ग की गणना से बारह दिन तक संघर्ष हुआ था जो धरती के लोगों के लिए बारह वर्ष होते हैं। प्रत्येक स्थान पर कुंभ पर्व भिन्न–भिन्न ग्रह स्थिति निश्चित है। उज्जैन के पर्व को लिए सिंह राशि पर बृहस्पति, मेष में सूर्य, तुला राशि का चंद्र आदि ग्रह–योग माने जाते हैं। सिंहस्थ उज्जैन में सिंहस्थ के साथ ही कुम्भ की भी अनुरूपता है। हालांकि दोनों पर्वों में खगोलीय विभिन्नताएं हैं किन्तु उज्जैन में दोनों की अनुरूपता एक महत्वपूर्ण संकेत है। इसलिए उज्जैन के सिंहस्थ कुंभ महापर्व का विशेष महत्व माना गया है।

सप्तपुरियों में उज्जैन

भारतीय संस्कृति की धरोहर, मोक्षदायिनी सप्तपुरियों में एक उज्जयिनी, महाकाल की उपस्थिति से अत्यन्त पावन, महिमा मण्डित, विक्रम के शौर्य–पराक्रम से दिग–दिगन्त में दैदीप्यमान और कवि कुलगुरु कालिदास के काव्यलोक से सम्पूर्ण विश्व में

गौरवान्वित नगरी है। स्कन्दपुराण में इसको प्रतिकल्पा' के नाम से सम्बोधित किया है, जो सृष्टि के आरम्भ में उसकी उत्पत्ति का प्रतीक है। वेदों एवं उपनिषदों में भी उज्जयिनी का धार्मिक दृष्टि से सब जगह वर्णन किया गया है। महाभारत काल में भारतवर्ष जब सौरव्य व उत्कर्ष के शिखर पर पहुंच चुका था। उस समय भी उज्जयिनी का महत्व बहुत बढ़ा हुआ था और उज्जयिनी में एक प्रसिद्ध विद्यापीठ विद्यमान था। उज्जयिनी का वर्णन प्राचीन वाङ्मय के कवि और लेखकों की रचनाओं में भी पाया जाता है जैसे- कालिदास, बाण, व्यास, शूद्रक, भवभूति, विल्हण, अमरसिंह, परिगुप्त आदि। उज्जयिनी के धार्मिक पवित्रता का महत्व प्राप्त होने के निम्न विशेष कारण हैं। इसी तरह मोक्ष देने वाली सप्तपुरियों में से उज्जैन प्रमुख है।

क्षिप्रा तट का महत्व

क्षिप्रा नदी के तट पर यह नगर बसा होने से विशेष पवित्र माना जाता है। क्षिप्रा का ऐसा महत्व है कि इसके समान पावन करने वाली कोई नदी नहीं है और दूसरा स्थान नहीं है। उज्जयिनी में 12 वर्ष में एक बार सिंहस्थ कुम्भ महापर्व का मेला क्षिप्रा तट पर लगता है। उस समय क्षिप्रा स्नान का विशेष महत्व वर्णित है। क्षिप्रा मालव देश की सुप्रसिद्ध और पवित्र नदी है। तेज बहने वाली नदी होने के कारण इसका नाम क्षिप्रा पड़ा। स्मृतियों पुराणों तथा अन्य ग्रन्थों में तो नारायण शब्द के मूल में जल की स्थिति ही प्रतिपादित की गई है। ऐसी ही शान्ति एवं स्फूर्ति प्रदान करने वाली तथा संस्कृति का इतिहास रचने वाली नदी है क्षिप्रा'। जिसके सम्बन्ध में समुचित ही कहा गया है-

क्षिप्रा प्रायाश्च कथां पुण्यां पवित्रं पापहारिणीम्। यह पवित्र नदी बैकुण्ठ में क्षिप्रा, स्वर्ग में ज्वरन्श्री, यमपुरी में पापाग्नि तथा पाताल में अमृतसम्भवा वराह कल्प में धेनुजा' नाम से विख्यात है।

देवी-देवताओ की परिक्रमा पंचकोशी

यह यात्रा लोक जीवन, धर्म और संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा है। इस यात्रा का उल्लेख स्कन्दपुराण के अवन्तिखण्ड में मिलता है, जिसके अनुसार महाकाल वन के चारों दिशाओं में चार द्वार हैं- पूर्व में पिंगलेश्वर, पश्चिम में विल्वकेश्वर, उत्तर में दुर्दरेश्वर और दक्षिण में कायावरोहणेश्वर। पंचकोशी यात्रा में तीर्थयात्री उज्जैन की परिक्रमा करते हैं और फिर क्षिप्रा के तट पर विश्राम कर अष्टाविंशति तीर्थ यात्रा पूरी करते हैं। यात्रा वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी को शुरू होती है और अमावस्या को समाप्त होती है। दन्तकथाएँ कहती हैं कि नागचंडेश्वर महादेव (शिवलिंग) के दर्शन करने से तीर्थयात्री शिवनिर्माल्य उल्लंघन के महापापों से मुक्त हो जाते हैं। यात्रा के यात्री एकादशी के दिन पिंगलेश्वर मंदिर पहुँचते हैं। यह यात्रा का पहला दिन होता है। वे यहां 81वें महादेव की पूजा करते हैं।

क्षिप्रा के पवित्र घाट

राम घाट– क्षिप्रा नदी के किनारे स्नान के लिए कई घाट निर्मित हैं। श्रीराम घाट को राम घाट के नाम से भी जाना जाता है। यह सबसे प्राचीन स्नान घाट है, जिस पर कुम्भ मेले के दौरान श्रद्धालु स्नान करना अधिक पसन्द करते हैं।

त्रिवेणी घाट– क्षिप्रा तट पर स्थित त्रिवेणी घाट का नवग्रह मन्दिर तीर्थयात्रियों के लिए आकर्षण का एक प्रमुख केन्द्र है। त्रिवेणी घाट पर ही क्षिप्रा–खान (खान नदी) का संगम है।

गऊ घाट–देश के श्रद्धालुओं को एक साथ स्नान घाटों पर लाने के लिए सिंहस्थ महाकुम्भ एक प्रमुख आकर्षण है। सिंहस्थ महाकुम्भ के दौरान लाखों श्रद्धालु विभिन्न घाटों पर एकत्रित होते हैं। श्रीराम घाट और नरसिंह घाट उज्जैन के प्राचीन और पवित्र स्नान घाट हैं।

मंगल नाथ घाट–यह तीनों घाट प्रसिद्ध मंगलनाथ मन्दिर के पुल के पास क्षिप्रा नदी के दायें एवं बायें किनारे पर स्थित है। सिंहस्थ महाकुम्भ पर्व एवं धार्मिक पवित्र नहान पर आने वाले श्रद्धालुओं के स्नान हेतु जल संसाधन विभाग द्वारा घाट का निर्माण किया गया है।

सिद्धवट घाट–यह घाट प्रसिद्ध सिद्धवट मंदिर के पास क्षिप्रा नदी के बायें किनारे पर स्थित है। सिंहस्थ महाकुम्भ पर्व व धार्मिक पवित्र नहान पर आने वाले श्रद्धालुओं के स्नान हेतु जल संसाधन विभाग द्वारा घाट का निर्माण किया गया है।

कबीर घाट–यह घाट उज्जैन बडऩगर मार्ग पर बड़ी रपट के दायीं तरफ क्षिप्रा नदी के बांये किनारे पर स्थित है। सिंहस्थ महाकुंभ पर्व व धार्मिक पवित्र स्नान पर आने वाले श्रद्धालुओं के स्नान हेतु घाट का निर्माण जल संसाधन विभाग द्वारा किया गया है।

ऋणमुक्तेश्वर घाट–ऋणमुक्तेश्वर मन्दिर के पास ही ये घाट बना हुआ है। इस घाट पर शिवजी के मुख्यगण वीरभद्र की प्राचीन मूर्ति भी है और पुराना वटवृक्ष जिसके नीचे ऋणमुक्तेश्वर महादेव के विभिन्न शिवलिंग एवं प्राचीन गणेश जी की मूर्ति स्थापित है।

दत्त अखाड़ा घाट–यह घाट उज्जैन बडऩगर मार्ग पर छोटी रपट के बायीं तरफ क्षिप्रा नदी के बांये किनारे पर स्थित है। सिंहस्थ महाकुंभ पर्व एवं धार्मिक पवित्र नहान पर आने वाले

श्रद्धालुओं के स्नान हेतु घाट का निर्माण किया गया है। इस घाट पर पहुंचने के लिए उज्जैन बडऩगर मार्ग पर छोटी रपट के बायीं ओर से रास्ता जाता है।

भूखीमाता घाट–यह घाट प्रसिद्ध भूखीमाता मन्दिर के पास क्षिप्रा नदी के बांये किनारे पर स्थित है। सिंहस्थ महाकुम्भ पर्व एवं धार्मिक स्नान के लिए आने वाले श्रद्धालुओं के स्नान हेतु

घाट का निर्माण किया गया है। इस घाट पर पहुंचने के लिए उज्जैन चिंतामण मार्ग के बड़े पुल के पास से बायीं तरफ रास्ता जाता है। जिसकी लम्बाई 700 मीटर है।

चिन्तामण घाट–यह घाट उज्जैन चिन्तामण मार्ग पर स्थित सड़क के बड़े पुल के पास रेलवे के लालपुल के नीचे क्षिप्रा नदी के बांये किनारे पर स्थित है। सिंहस्थ महाकुम्भ पर्व एवं धार्मिक पवित्र नहान पर आने वाले श्रद्धालुओं के स्नान हेतु घाट का निर्माण किया गया है। घाट पर पहुंचने हेतु उज्जैन चिन्तामण मार्ग पर बड़े पुल के पास से दायीं तरफ से सीमेण्ट कांक्रीट रास्ता जाता है जिसकी लम्बाई 50 मीटर है।

प्रशांति धाम घाट–यह घाट प्रशान्तिधाम मंदिर के प्रांगण में क्षिप्रा नदी के दायें तट पर स्थित है। यह घाट उज्जैन–इन्दौर मार्ग से लगभग 1.5 किलोमीटर दूर दायीं तरफ मंदिर के पास स्थित है। श्रद्धालुओं के स्नान हेतु एवं पवित्र स्नान हेतु घाट को निर्मित किया गया है।

सुनहरी घाट–यह घाट उज्जैन बडऩगर मार्ग पर छोटी रपट के दांयीं तरफ क्षिप्रा नदी के दांयें किनारे पर स्थित है। सिंहस्थ महाकुम्भ पर्व एवं धार्मिक पवित्र नहान पर आने वाले श्रद्धालुओं के स्नान हेतु घाट का निर्माण किया गया है। इस घाट पर पहुंचने के लिए उज्जैन बडऩगर मार्ग पर छोटी रपट के दायीं ओर से रास्ता जाता है।

नृसिंह घाट–यह घाट प्रसिद्ध भूखीमाता मन्दिर के सामने प्रसिद्ध कर्कराज मन्दिर के दायीं तरफ क्षिप्रा नदी पर स्थित है। कर्कराज मन्दिर की यह विशेषता है कि यह मंदिर उज्जैन से निकलने वाली कर्क रेखा पर स्थित है। श्रद्धालुओं के स्नान हेतु घाट का निर्माण किया गया है। इस घाट पर पहुंचने के लिए उज्जैन चिंतामण मार्ग पर बड़े पुल के दायीं तरफ से रास्ता जाता है, जिसकी लम्बाई 500 मीटर है।

कुंभ पर्व पर तीर्थादि जलाशयों में स्नान, दानादि की विधि

माघ (मौनी) अमावस प्रमुख पर्व को प्रमुख स्नान के पूर्व या पश्चात शुभ स्नान पर्व पर अरुणोदय या सूर्योदय काल के समय संकल्प पूर्वक स्नान करने से विशेष लाभ मिलता है। सर्वप्रथम संकल्प में कहें - सर्वपापाय निवृत्ति पूर्वकं सर्वाभीष्ट फलवाप्ति धर्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धयर्थं भगवत्या गंगाया: यमुना सरस्वती भगवान विष्णु शिवस्य च षोडशोपचार पूजन च विधाय गंगा यमुना पावन धाराया इह प्रयाग पुण्यतीर्थे स्नानं पूजनं दानं च करिष्ये। त्रिवेणी (संगम) में प्रवेश करने से पूर्व पुष्पाक्षत, नारियल एवं मुद्रा सहित अर्पित करते हुए यह मंत्र पढ़ें - **गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती। नर्मदे सिंधु कावेरी जलेऽस्मिन संनिधिं कुरु।। गङ्गयै नमः।। यमुनायै नमः।।**

सरस्वत्यै नमः।। पुनः निम्न मंत्रों से दोनों हाथों में जल लेकर भगवान सूर्य से प्रार्थना करें - **अपस्त्वमसि देवेश ज्योतिषां पतिरेव च। पापं नाशय मे देव वाङ्मनः कर्मभिः कृतम्।** पुनः दोनों हाथों द्वारा एक कुंभ मुद्रा बनाकर भगवान विष्णु एवं सूर्यादि देवों का ध्यान करते हुए निम्न मंत्र पढ़ें - **दुःख दारिद्रय नाशाय विष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नान करोमि अद्य माघ मासे पाप विनाशम्।। मकरस्थै रवौ माधे गोविन्द च्युत माधव। स्नानेनानेव मे देवं यथोक्त फलदो भव।।** फिर सूर्य देव को ताम्र बर्तन में लाल चंदन, पुष्पाक्षत डालकर इस मंत्र के साथ अर्घ्य देवें - **ऐहि सूर्य सहस्त्रांशो** अथवा **घृणि सूर्याय नमः।** तदुपरान्त ब्रह्मा, विष्णु, महेश, भगवती गंगा, सरस्वती व सूर्यादि देवों को जलांजलि देकर नमस्कार करें। स्नानोपरान्त घृत सहित अन्नादि से आपूरित कुंभ को वस्त्र, अलंकार, पुष्प-पत्रों से सुसज्जित कर उसकी षोडश या पंचोपचार पूर्वक पूजन करके सुवर्ण, चांदी या वस्त्र धनादि की दक्षिणा सहित किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान करें। ब्राह्मण व साधुओं को भोजन कराने से सैकड़ों गोदान का फल मिलता है। विष्णु पुराण में कहा गया है कि हजारों अश्वमेध यज्ञ करने से, सौ बाजपेय यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से जो फल प्राप्त होता है वह फल केवल प्रयाग के कुंभ स्नान-दान से मिल जाता है - **अश्वमेध सहस्त्राणि बाजपेय शतानि च। लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः स्नानेन तत्फलम्।।**

शास्त्रोक्त ज्ञान

पंचदेव- (सभी गृहस्थों को पूजा करनी चाहिए) गणेश, शिव, विष्णु, दुर्गा, सूर्य।

इष्टदेव - अपना प्रिय देवता (माता, पिता, गुरू, देवता एवं ऋषि)

पंच तत्व- जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश।

कुल देवता - कुल के परंपरानुसार पूजित देवता (देव, नाग, किन्नर व गंधर्व)

पंच पल्लव - बरगद, गूलर, पीपल, आम एवं पाकड़।

पंच रत्न- पुखराज, हीरा, मोती, पद्मराग और नीलम।

पंचामृत- गौ-दुग्ध, गौ दही, गौघृत, शहद और शकर।

पंच गव्य - गाय का गौमूत्र, गोबर, घी, दही तथा दूध।

पंचमृदा - गौशाला, हथसार, शमशान, बामी तथा राजदरबार।

सप्तऋषि - गौतम, वशिष्ठ, जमदाग्नि, अत्रि, कश्यप, पारासर, भृगु एवं सत्यवाणी।

पंचधातु- सोना, चांदी, तांबा, कांसा और पीतल।

सप्तधान्य - जौं, धान, तिल, कौदो-कुटकी, मूंग, चना एवं गेहूं।

सप्त मृत्तिका - घुड़साल, हाथीसाल, बांबी, नदियों का संगम, तालाब, राजा के द्वार और गौशाला।

सर्वोसंधि - मुरा, जयमासी, बच, कुष्ठ, शिलाजीत, हल्दी और दाऊ हल्दी, सठी, चम्पक, मुस्ता।

पंचमंत्र – नवार्ण, पंचाक्षरी, द्वादशाक्षर, महामृत्युंजयी, सिद्ध मंत्र।

अवस्थाएं – बाल्यावस्था, किशोर, युवा, वृद्धावस्था

नवग्रह – सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, राहू, केतु।

छाया ग्रह – राहु–केतु।

मांत्रिकाएं – गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसैना, मातरो, लोकमाता, धृष्टि, पुष्टी, तुष्टी, आत्मनः, कुलदेवता, गणेशाम्बिका।

द्वादश ज्योर्तिलिंग – सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ऊंकार (ममलेश्वर), केदारनाथ, भीमशंकर, विश्वनाथ, त्रयम्बकेशवर, वैद्यनाथ, नागेश्वर, सोमेश्वर, घृष्णेश्वर (शिवालय)

दस दिशाएं – पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नेऋत्य, पश्चिम, बायव्य, उत्तर, ईशान, उद्धर्व भूमि।

दशोप चार – पद्य, अर्घ, आचमन, स्नान, वस्त्र, निवेदन, गंध, पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य।

पंचोप चार – गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।

षोडसोपचार – पाद्य, अर्घ, आचमन, स्थल, वस्त्र, आभूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, स्तुति, पाठ, तर्पण, नमस्कार।

पंच लोकपाल – गणेशजी, दुर्गा, वायु, आकाश, अश्वनी कुमार।

नवदुर्गा – शैलपुत्री, ब्रह्मचारणी, चंद्रघंटा, स्कंधमाता, कूशमांडा, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी एवं सिद्धिदात्री।

दश दिग्पाल – इंद्र, अग्नि, यम, नैरित्का, वरुण, वायु, कुबेर, ईशन, ब्रह्मा, अनन्त।

अष्ट लक्ष्मी – अमृत, आध्य, विद्या, सौभाग्य, काम, सत्य, भोग एवं योग।

स्नान – मंत्र, स्नान, वारुण स्नान, भौम स्नान, अग्नि स्नान, वायव्य स्नान, दिव्य स्नान, मानसिक स्नान।

चार वर्ण – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

संगम – गंगा, जमुना, सरस्वती।

त्रिदेव – ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

त्रिदेवियां– महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती।

पंच माता– जननी, भूमि, पालनहारी, गौ भारत।

पंचकाशी – वाराणसी, गुप्तकाशी, उत्तरकाशी, दक्षिणकाशी, शिवकाशी।

पंचनाथ – **उत्तर** – श्री बद्रीनाथ, श्री बद्रीकाश्रम (उत्तराखंड), **दक्षिण** – श्री रंगनाथ (रामेश्वर) पूर्व – श्री जगन्नाथ, श्री जगन्नाथपुरी (उड़ीसा), **पश्चिम** – श्री द्वारकानाथ, श्री द्वारिका (सौराष्ट्र–गुजरात), **मध्य** – श्री गोवर्धननाथ, श्री नाथद्वारा (राजस्थान)।

सप्त मोक्षनगरी – अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, उज्जैन, द्वारिका।

पंच सरोवर – बिन्दु सरोवर (सिद्धपुर), नारायण सरोवर (कच्छ–गुजरात), पम्पा सरोवर (मैसुर स्टेट), पुष्कर सरोवर (अजमेर–राजस्थान), मान सरोवर (कैलाश पर्वत–चीन)

सप्त सरस्वती– सुप्रभा (पुष्कर), विशाला (गया), कांचनाक्षी (नैमिषारण्य), मनोरमा (उत्तरकौसल), ओघवती

(कुरुक्षेत्र), सुरेणु (हरिद्वार), विमलोद्रका (हिमालय)

सप्तगंगा – भागीरथी, वृद्ध गंगा, कालिंदी, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा, सिंधु।

सप्त पवित्र नदियां – गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा, सिंधु।

सप्त पाताल – तल, अतल, सुतल, वितल, तलातल, रसातल, पाताल

सप्त द्वीप – जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक, पुष्कर

कुंभ स्नान मेला – हरिद्वार – कुंभ राशि का गुरू और मेष राशि का सूर्य होने पर, प्रयाग (इलाहाबाद) – वृष राशि का गुरू और मकर का सूर्य होने पर, उज्जैन – सिंह राशि का गुरू और मेष का सूर्य होने पर, नासिक – सिंह राशि का गुरू और सिंह का सूर्य होने पर।

नवखंड –इलावृत, भद्राश्व, हरिवर्ष, केतुमाल, रम्यक, हिरण्यमय, कुरू, किंपुरूष, भारतवर्ष।

सप्त समुद्र– 1 लवण मय सिन्धु, 2 क्षीर सिन्धु, 3 दधि सिन्धु, 4 धृत सिन्धु, 5 इक्षुरसमय सिन्धु, 6 मधुमय सिन्धु एवं 7 अमृतमय सिन्धु।

शास्त्रोक्त वचन

जब हम प्राचीन धर्म ग्रंथों का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं तभी इन रहस्यों को जान पाते हैं। प्रस्तुत हैं कुछ रहस्यात्मक शास्त्र वचन–

1. घर में पूजा करने वाला एक ही मूर्ति की पूजा नहीं करे। अनेक देवी देवताओं की पूजा करे। घर में दो शिवलिंगों (एक ही आकृति) की पूजा न करे तथा पूजा स्थान पर तीन गणेश नहीं रखे।
2. सालिगराम की मूर्ति जितनी छोटी होती है उतनी ही ज्यादा फलदायक होगी।
3. कुशा पवित्री के अभाव में स्वर्ण की अंगूठी धारण करके भी देव कार्य संपन्न किया जा सकता है।
4. मंगल कार्यों में कुमकुम का तिलक प्रशस्त माना जाता है। पूजा में अक्षत के टुकड़े नहीं चढ़ाना चाहिए। पूजा में पूर्ण चावल का उपयोग करना चाहिए।
5. पानी, दूध, दही आदि में अंगुली नहीं डालना चाहिए। इन्हें लोटी, चम्मच आदि से लेना चाहिए क्योंकि नख के स्पर्श से वस्तु अपवित्र हो जाती है। तथा उपरोक्त वस्तुएं देव पूजा के योग्य नहीं रहतीं।
6. तांबे के बर्तन में दूध, दही या पंचामृत आदि नहीं रखना चाहिए क्योंकि वे मदिरा के समान हो जाते हैं।
7. आचमन तीन बार करने का विधान है। इससे त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश प्रसन्न होते हैं। आचमन के अभाव

में दाहिने कान का स्पर्श करने पर भी आचमन तुल्य माना जाता है।

8. कुशा के अग्र भाग से देवताओं पर जल नहीं छिड़कें इससे देवताओं का अपमान होता है।
9. देवताओं को अंगूठे से नहीं मलहें। चकले पर से चंदन कभी नहीं लगाए उसे छोटी कटोरी या बांयी हथेली पर रखकर लगाएं।
10. पुष्पों को बाल्टी, लोटा जल में डालकर फिर निकालकर नहीं चढ़ाना चाहिए।
11. भगवान के चरणों की चार-बार, नाभि की दो बार, मुख की एक या तीन बार आरती उतार कर, समस्त अंगों की सात बार आरती उतारना चाहिए।
12. लोह पात्र में भगवान को नैवेद्य अर्पण नहीं करें। इसमें शनि का वास होता है।
13. हवन में अग्नि प्रज्जवलित होने पर ही आहूति दें। छाल रहित या कीड़े लगी हुई समीधा यज्ञ कार्य में वर्जित है। पंखे आदि से हवन की अग्नि प्रज्जवलित नहीं करें।
14. मेरू हीन माला या मेरू का लंगन करके माला नहीं जपना चाहिए। माला तुलसी, रुद्राक्ष या चंदन की उपयुक्त मानी जाती है।

15 जप करते समय सिर पर हाथ या वस्त्र न रखें। तिलक कराते समय सिर हाथ या वस्त्र अवश्य रखना चाहिए।

16 माला का पूजन करके ही जप करना फलदायी माना जाता है।

17. ब्राह्मण को या दुजाति को स्नान करके तिलक अवश्य लगाना चाहिए उससे उसका ज्ञान चक्षु प्रकट होता है।
18 जप करते हुए जल में स्थित व्यक्ति, दौड़ते हुए, श्मशान से लौटते हुए, व्यक्ति को नमस्कार वर्जित है। बिना नमस्कार किए आशीर्वाद देना वर्जित है।
19. एक हाथ से प्रणाम नहीं करना चाहिए।
20 सोए हुए व्यक्ति का चरण स्पर्श नहीं करना चाहिए।
21 पैर पढ़ने के लिए दाहिने हाथ से दाहिने पैर का स्पर्श करें और बाएं हाथ से बाएं पैर का स्पर्श कर प्रणाम करें।
22. जप करते समय जीभ या ओठ को नहीं हिलाना चाहिए इसे उपांशु जप कहते हैं। ऐसा करने से जप का फल सौ गुना हो जाता है।
23. जप करते समय दाहिने हाथ को माला सहित कपड़े या गौमुखी से ढककर रखना चाहिए।
24. जप के बाद आसन के नीचे की भूमि को स्पर्श कर नेत्रों से लगाना चाहिए।
25 संक्रातिकाल, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, रविवार और प्रदोष काल के समय तुलसी तोड़ना निषेध है।
26. दीपक को दीपक से नहीं जलाना चाहिए।
27 यज्ञादि हवनीय कार्यों में काले तिल का प्रयोग करना चाहिए, सफेद तिल का नहीं।

विशेष

अमृत मंथन से कामधेनु की उत्पत्ति

अमृत मंथन से अनेक प्रकार के अमृत, विष एवं रत्न आदि के साथ कामधेनु प्रकट हुई जो पृथ्वी पर उपकार स्वरूप, धरती माता तथा भक्तों को पवित्र कर सुख प्रदान करती है।

गाय के प्रति भारतीय आस्था को अभिव्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि गाय सहज रूप से भारतीय जनमानस में रची-बसी है। गौ सेवा को एक कर्तव्य के रूप में माना गया है। गाय सृष्टि मातृका कही जाती है। गाय के रूप में पृथ्वी की करुण पुकार और विष्णु से अवतार के लिए निवेदन के प्रसंग पुराणों में बहुत प्रसिद्ध हैं। 'समरांगण सूत्रधार'-जैसा प्रसिद्ध बृहद्वास्तुग्रंथ गौ रूप में पृथ्वी-ब्रह्मादि के समागन-संवाद से ही आरंभ होता है। वास्तुग्रंथ 'मयमतम्' में कहा गया है कि भवन निर्माण का शुभारंभ करने से पूर्व उस भूमि पर ऐसी गाय को लाकर बांधना चाहिए, जो सवत्सा (बछड़े वाली) हो। नवजतात बझड़े को जब गाय दुलार कर चाटती है तो उसका फेन भूमि पर गिरकर उसे पवित्र बनाता है और वहां होने वाले समस्त दोषों का निवारण हो जाता है। यही मान्यता वास्तु प्रदीप, अपराजितपृच्छा आदि ग्रंथों में भी है। महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा गया है कि गाय जहां बैठकर निर्भयतापूर्वक सांस लेती है तो उस स्थान के सारे पापों को खींच लेती है। यह भी कहा गया है कि जिस घर में गाय की सेवा होती है, वहां पुत्र-पौत्र, धन-विद्या आदि सुख जो भी चाहिए, मिल जाता है। यही मान्यता अत्रिसंहिता में भी आई है। महर्षि अत्रि ने तो यह भी कहा है कि जिस घर में सवत्सा धेनु नहीं हो, उसका

मंगल-मांगल्य कैसे होगा? जिस स्थान पर भवन, घर का निर्माण करना हो, यदि वहां पर बछड़े वाली गाय को लाकर बांधा जाए तो वहां संभावित वास्तुदोषों का स्वत: निवारण हो जाता है, कार्य निर्विघ्न पूरा होता है और समापन तक आर्थिक बाधाएं भी नहीं आतीं।

गाय को घर में पालना बहुत लाभकारी है। इससे घरों में सभी बाधाओं एवं विघ्नों का अपने आप निवारण हो जाता है और बच्चों में भय समाप्त हो जाता है। विष्णु पुराण में कहा गया है कि जब श्रीकृष्ण पूतना के दुग्धपान से डर गए तो नंद-दंपति ने गाय की पूंछ घुमाकर उनकी नजर उतारी और भय का निवारण किया। सवत्सा गाय के शकुन लेकर यात्रा में जाने से कार्य सिद्ध होते हैं।

पद्मपुराण और कूर्मपुराण के अनुसार गाय को लांघकर नहीं जाना चाहिए। किसी भी साक्षात्कार, रंभाने की ध्वनि कान में पड़ना शुभ है। संतान-लाभ के लिए गाय की सेवा सर्वोत्तम उपाय माना गया है। शिवपुराण व स्कंदपुराण में बताया गया है कि गौसेवा और गौदान से यम का भय नहीं रहता। गाय के पैरों की धूल का भी अपना महत्व है। यह पाप नाशक है, ऐसा गरुड़ पुराण और पद्मपुराण में बताया गया है। ज्योतिष एवं धर्मशास्त्रों में बताया है कि गौधूली वेला विवाहादि, मंगल कार्यों के लिए सर्वोत्तम मुहूर्त है। जब गायें जंगल से चरकर वापस घर को आती हैं, उस समय उठने वाली धूलराशि समस्त पाप-तापों का नाश करने वाली होती है। पंचगव्य एवं पंचामृत की महिमा तो सभी को मालूम ही है। गौदान की महिमा से लगभग सभी लोग परिचित होंगे। ग्रहों के अरिष्ट-निवारण के लिए गौग्रास देने तथा गौ के दान की विधि ज्योतिष-ग्रंथों में विस्तार से बताई गई है। गरुड़ पुराण के अनुसार मनुष्य को वैतरणी पार गाय ही करा सकती है तथा स्वर्ग के द्वार भी खोलती है। इस प्रकार गौ पालन से या गौ संरक्षण से हमेशा जनमानस का कल्याण होता है।

रुद्र वीसी का तीसरा वर्ष

रुद्र बीसी का यह तीसरा साल है। रुद्र बीसी से तात्पर्य शिव तांडव के 20 वर्ष हैं, जिसमें प्रलयांकारी शिव अपनी तरह से इस प्रकृति को चलाएंगे जिसमें प्राकृतिक प्रकोप के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में समरसता खंड-खंड होगी, लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे होंगे, हिंसा भड़केगी एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध भी होंगे। जिससे अपार जन-धन की हानि होना तय है। ज्योतिषी और पंडितजन भृगु संहिता के आधार पर बताते हैं कि प्रकृति के बड़े परिवर्तन युग आधारित होते हैं, लेकिन छोटी अवधि के हिसाब से ब्रह्मा वीसी, विष्णु बीसी और रुद्र बीसी को 20-20 वर्ष के कालखंड में बांटा गया है। भृगु संहिता जैसे ज्योतिषीय ग्रंथ में 60 तरह के संवत्सरों का उल्लेख है जिसमें ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र बीसी का तात्पर्य बीस-बीस वर्ष के अवधिकाल से बताया गया है। इस तरह देखा जाए तो रुद्र बीसी अभी पिछले वर्ष 2013 में प्रारंभ हुई है जो कि आगामी सन् 2034 तक चलेगी, चूंकि रुद्र यानि शिव संहार के देवता है। लिहाजा आने वाले 20 वर्ष संहारक माने जाएंगे। जिसमें प्राकृतिक प्रकोप व मानवीय उपद्रव, हिंसा व युद्ध जैसी परिस्थितियां निर्मित होना स्वाभाविक है। रुद्र बीसी के आरंभ का प्रभाव केदारनाथ धाम में हुए प्रलय से समझा जा सकता है उसके बाद पशुपतिनाथ, नेपाल-भारत में भूकंप से हजारों लोगों की मौत इसी रुद्र बीसी का प्रभाव है। इसके अलावा अभी पिछले डेढ़-दो वर्ष के भीतर अनेक प्राकृतिक, सामाजिक व राजनैतिक घटनाक्रम देखने में आ चुके हैं जो कि इस रुद्र बीसी का प्रभाव ही माना जा सकता है। भोपाल के नेहरू नगर क्षेत्र स्थित ज्योतिष मठ संस्थान के संस्थापक व प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पं. अयोध्या प्रसाद गौतम ने अपने अनुसंधान के आधार पर बताया कि रुद्र बीसी के चलते आने वाला समय भयावहतापूर्ण है और इस भविष्यवाणी

का उद्घोष किसी तरह का भय उत्पन्न करना नहीं, बल्कि सचेत करने की दृष्टि से किया जाना आवश्यक है। रुद्र बीसी इसके पहले 1952 से 1972 के बीच आई थी जिसमें अनेक तरह के प्राकृतिक प्रकोपों के साथ-साथ भारत-चीन एवं भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ था। इधर पिछले वर्ष शुरु हुई रुद्र बीसी के पहले यानि 1993 से 2013 तक विष्णु बीसी का प्रभाव था विष्णु भगवान चूंकि जगत पालनहार देवता के रूप में जाने जाते हैं जिनके प्रभाव के चलते प्राकृतिक संपदा पर्याप्त रूप से इकट्ठा हुई और खेतों में फसलें भी अपेक्षा से कही ज्यादा हुईं। यहां तक कि गेहूं की उपज को लोग सुरक्षित नहीं कर पाए और हजारों टन गेहूं आसमान तले पड़ा-पड़ा खराब हो जाने के समाचार सभी ने पढ़ें और सुने। इसके पूर्व 1973 से 1992 के बीच ब्रह्मा बीसी का प्रभाव था, चूंकि ब्रह्मा उत्पत्ति और सृजन के देवता माने जाते हैं इस तरह से देखा जाए तो इन वर्षों में जनसंख्या वृद्धि इस कदर हुई की चीन और भारत को इस पर कंट्रोल करने के लिए नसबंदी एक अभियान के रूप में शुरु करनी पड़ी। अब एक बार फिर यह समय रुद्र बीसी का है, जिसमें संहार के देवता शिव का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। ज्योतिषियों का कहना है कि यह रुद्र बीसी आरंभ से ही भयावह घटनाओं को सामने ला रही है। ऐसा लगता है कि भगवान शिव ने अपने संहारक अभियान की शुरुआत अपने ही धाम यानि केदारनाथ और फिर पशुपतिनाथ क्षेत्र से की है। जहां आई तबाही के घाव सदियों तक नहीं भर पाएंगे। जिस तरह से रुद्र ने अपनी तीसरी आंख खोली है उसमें सबसे पहले तीर्थ क्षेत्र ही निशाने पर दिख रहे हैं, जहां शास्त्र आधारित मान-मर्यादाओं का विखंडन हो रहा है। इससे ऐसा लगता है कि आने वाले 20 वर्ष बहुत ही संभल कर चलने के हैं क्योंकि इन दिनों में संहार से जुड़ी घटनाएं हर कभी सामने आएंगी। लिहाजा शिव उपासना ही इनसे बचने का एक मात्र उपाय है।